

वा।। कुनी शोलवनी नलस्य दियता चुला प्रमन् वत्पि।। पद्मावत्यिप सुदरी दिनसुखे, कुर्वेतु वो मंगलम्। १। हिंदि क्याण नरणम्। सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण नरणम्। प्रधानं सर्व धर्माणा, जैन जयित शासनम्। २।

॥ श्री अस्हित स्तुति ॥
॥ माधीराव पर ॥

तुंही अरिहन तुही भगवंन, तुही जिनराज तुंही जगमंत ॥तुंही जगनाय तुंही प्रतिपाल, तुहीं मनमोहन गांजि दयाल ॥ तुंही मवमंजन भाव स्वरुप तुंही अरिगजन रजनभूप॥ तुंही अविनाश तुही विनराग, तुही महाराज तुंही वह भाग ॥तुही गुणघाम तुही विनराम, तुही नव निव तुंही वह नाम ॥ तुही अघनाथ तुही अविनाश, तुंही मित वंन तुदी मनवाम॥नुंही गुणकेवलक्य सनन, तुंही जगे तरण तारण संत।। तुंही जगध्याय तुंही जगध्यान, तुंही चिदरुप तुंही जगभाण ।। तुंही शरणागत रा-खणहार, तुंही दुःख दोहग टालणहार । ५ ।

॥ गणधर स्तवन ॥

एकादश गणधरनां नाम, पह उडीने करुं प्रणाम ।। इंद्रभूति पहेलो ते जाण, अमिसूति बीजो गुण खाण । १। वायुभूति त्रीजो जगसार, गणधर चोथो व्यक्त उदार ॥ शासनपति सुधर्मी सार, मं-हित नामे छड़ो धार, १२। मौर्यपुत्र ते सातमो जेह, अकंपित अप्टम गुण गेह ।। मुनिवर मांहे जे पर-थान, अचलभात नवमो ए नाम ।३। नाम थकी होय कोडी कल्याण, दशमो मेतारज अविरल वा-ण ॥ एकादशमी प्रभास कहेवाय, सुखसंपत्ति, जस नामे थाय । ४१ गाया वीरतणा गणधार, गुणमणि रयणतणा भंडार ॥ उत्तमविजय गुरुनो शिष्य, र- त्नविजय वंदे निशदिश । ५ ।

॥ भमातियां ॥

आवी रुही भगती में पहेलां न नाणी प हेलां न जाणीरे प्रमु पहेलां न जाणी, संसारनी मायामां में बलोब्युं पाणी १। ए आंकणी ।। करप-तर्रेनां फळ ळावीने, जे जिनवर पूजे, काळ अनादि कर्म ते सचित, सत्तायी घूजे ॥ आवी० ।श धावर तिरि न्रया यवए दुर्गे, इग विगला लीजे, साधार ण नवमे गुणद्राणे, पूर भागे छीजे ॥ आबीवारा केवळ पामीने शिवगति गामी, शैले शीटाणे, चरम समय दोप मांहे स्वामि, अतिम गुणराणे ।।आवी० वाकी नामक्रमनी पयही, ते मध्ळी जावे. अजर अमर निष्कलक म्वरुपे, निकर्मा थावे ॥ आबी० । श जे सिद्ध केरी पहिमा पूजे, ते सि-दमयि होवे, नाही धोइ निर्मळ चिते. आरीसो जो

वडा वार लागे; कोडी कर जोडी दरवार-आगे स-डा, ठाकुरा चाकुरा मान भागे ।१। प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोड असुराणने आप छोडो: मुज महिराण मजुसमां पेसीने, खलकना नाथजी वंध खोलो ।२। जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम द्यं आज जिनराज उंधे; मोटा दानेश्वरी तेहने दा-खीए, दान दे जेह जग काळ मेंचि।श भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, ततक्षिण त्रीकमे तुज सं-भार्यी; प्रगट पाताळथी पलकमां ते प्रभु, भक्तिजन

तेहनो भय निवार्यी । ध आदि अनादि अस्हित

घर आवे।। आवी रुडी भगती में पहेलां न जाणी ६

पास संखेश्वरा सार कर सेवका, देव कां ए-

तु एक छे, दिनदयाठ छे कोण दूजों, ऊदयरतन कहे प्रगटप्रमु पामजी,पामी भयमजनो एह पूजो ५

चालोने प्रितमजी प्यारा, शेत्रुंजे जहए शे-त्रुंजे जहार चालोने पितमजी ।। ए आंकणी ॥ श्रं मंमारे रह्या छो मोही, दिन दिन तन छीजे: आर आभनी छाया मरसी, पोतानी कीजे, चालो॰ 11। जे क्रव ते पेलां कीजे, काळे शी वातो, अ-णिवनवीआ आवी पड़ेरा, मनरानी लानो ।।चालो० ।२। चत्राङ्म चित्तमां चेती, हाये ते साये, मरण तणा निभाणा मोग गाजे छे माये ॥ चालोगश नाना मस्देवा नतन निरखी, भव सफ्लो कीजे: टानवी न माहिननी सेवा ए सबली लीजे ॥चा० ४

प्रभान पंलीडा बोले, रजनी थोडी, माना म रुटवा कट उटो पुत्र आलस मोडी ॥ प्रभाते० ।१।

(9) ~ देव देवी तारुं मुख जोवाने, उभा सुर कोडी; वाट जुवे वनिता नगरीमां, दियो दरिशन दोडी ॥प्रभाते०

1श सुर इंद्र सभामां आवे, सुर लोक छोडी; नाटक कारण किन्नर आवे, दिगकुमरी दोडी ॥ प्रभाते० 1३। सुरज तो सवारे उगे, निमिर जाळने तोडी: -अवसर जाणी चंद्र उग्यों छे. दियो दरिशन दोडी प्रभाते० । १। नाभिनंदननो नाहलो निहाळी, हरखे सुर कोडी; लक्षमीचंद शिष्य राम पयंपे, वंद कर-जोडी ॥ प्रभाते० ।५। ॥ श्लोक ॥ मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गै।तम प्रभुः।।

मंगलं स्थुलिभंदाचा, जैनोधमेी उस्तु मंगलं ॥१॥१

॥ भावनाओ ॥ दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं:

दर्शनं शिव सोपानं, दर्शनं मोक्ष साधनं.

ममु दर्शन सुल संपदा, ममु दर्शन नव निद्ध, ममु दर्शनयी पामीए, सकल पदारथ सिद्ध भावे जिनवर पूजीए, भावे दीजे दान, मावे भावना मावीए, मावे केवळज्ञान, त्रिमूबन नायक तु धणी, महा मोहोटो महाराज, मोहोटे पुन्ये पामीओ, तुम दर्शन हुं माज आज मनोरय सबी फळ्यां, प्रगटपा पुन्य कछोल, पाप करम दूरे टळयां, भाग्यां दु स मंहोठ जीवहा जीनेवर पूजीए, पून्याना फळ होय, राज नमे प्रजा नमें, आण न छोपे कोय वाही चपो मोरीमो, सोवन पांसहीए, पार्थ जीनेश्वर पूजीए, पांचे आंगळीए आमने वहाली बोजळी, धरतीने वहाली मेह, राज्जल पहारा नेमजी, आपने बहालो देह आची जलेबो पानळी, खुणे वेशी साय.

देव गुरुनी निंदा करे, ते सातमी नरके जाय,

. कर्_र त सातमा नरक जाय, ॥ दोहरा ॥

एक जंबु जग जाणिये, बीजा नेमकुमार्य। त्रीजा वयर वलाणिये, चोथा गौतम स्वामि ॥२॥

जगत्रयाधार कृपावतारं, दुर्वार संसार विकार वैद्यं; श्रीवितराग त्विय मुग्धभावात, विज्ञप्रभो विज्ञ-ण्यामि किंचित.

देखीरे अद्भूत ताहरु रुप, अचरिज भविका-रुपी पद वरे; ताहरी गत तुं जाणे हो देव; सम-रुण भजन ते वाचकजस कहे.

सकल कर्म वारी, मोक्ष मार्गाधिकारी; त्रिभुवन उपगारी, केवळज्ञान धारी. ॥१॥ भविजन नित्य शेवो, देव ते भक्तिभावे; इहज जीन भजनां सर्व संपत्ति आवे ॥शाः जीनवर पद शेवा, सर्व संपत्ति दाइ, — निशिदिन सुखदाइ, कल्पवल्ली सहाइ ॥शाः निमि विनमि लहीजे, सर्व विद्या वहाइ, ऋपम जिनह शेवा, साधतां तेह पाइ ॥शाः

तुं अक्लकी रूप स्वरुपी, परमानंद प्द दाइ ॥ तुं शक्त बद्धा जगदिश्वर, वितराग तुं नि माइ।श अनोपम रूप देखी तुज रीज्ञे, सुर नर नारी के बंदा ॥ नमो निरजन फणीपित सेविन, पास गो हीचा सुर कटा । श माने कुडल शिर छत्र विराजे, चन् दिना निरधारी ॥ अष्ट बीजोई हाथ सोहे, तुम पद वटे सहु नर नारी 121 अमि क्राप्टर्स सर्प निका त्या मत्र सुनाया षहु भारी॥ पूख जनमका वैर खोलाया जढ बग्माया शिरघारी lel जळ आवी

अभु नाके अढीओं, आसन कंप्या नीर्धारी ॥ नाग नागणी छत्र धरे छे, पूरव जनमका उपकारी । । रूपविजय कहे सुण मेरी लावणी, एसी शोभा बहु सारी ॥ माता पिता बांधव सहु साथे, संजय लीधां नीरधारी । ६।

॥ जल पूजी॥

सुगंघमें जळ वासीने, जे पूजे जिनराय: तस त्रिभुवन जश विस्तरे दुर्गधता दूर जाय. मलिन वस्तु उज्बळ करे, एह स्वभाव जळमांय; जळशुं जिनवर पूजतां, कर्म कलंक मिट जाय. तीथीदक कुंभे करी, रत्न प्रमुख श्रीकार; अह सहस अह जातिना, अथवा कलशा चार. आट जाति कलशे करी, न्हवरावे जिनसय; तस्स त्रिभुवन जश विस्तरे, सुरपति सेवे पाय. ज्ञान कळश भरी आतमा, समता रस भरपूर; श्री जिनने जनगणनां न

॥ चंदन पूजा ॥

केसर चदन द्रायथी, भावयकी बहु मान, जिनवर अगे चरचता, प्रगटे आतम ज्ञान केशर चदन घसी करी, मरी कचोळा सार जिनवर अंगे चरचतां, पाप करो परिहार बावना चंटन अति भद्धं, कस्तुरी बरास, इण विध जिनवर सेवतां, पामें छील विला कनक क्चोल मरी करी, सेवे जिनपति पा दुः स दोहग दुरे ठळे मनवांछित सुस थाय नम्र वस्तु शीतळ करे, चदन शीतळ आए, चदनसे जिन पूजतां, मटे मोह सताप पुजाने प्रणाम दो, करो चदनकी रीत, शीतर ने सुगंघता, जेणे माजे मवमीत

॥ नव अंग पुजाना दुहा ॥ जळ मरी सपूट पत्रमां, जुगलीक नर पूजत, रिखव चरण अंगुठहे, दायक भवजळ अंत. ॥१॥ जानुबळे काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश: खडां खडां केवळ लह्यं, पूजो जानुं नरेश. ॥२॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरशीदान: करकांडे प्रभु पूजतां, पूजो भवि बहु मान. ।।३।। मान गयो दोय हंसथी, देखी वीर्य अनंत; भुजाबळे भवजळ तर्या, पूजो खंध महंत. सिद्धसिहा गुण उजळी, लोकंते भगवंत, वशिया तेणे कारेण भवि, शिर शिखा पूजत. ॥५॥ तिर्शेकरपद पुन्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत; त्रिभुवन तिलक समाप्रभु, भाळ तिलक जयवंत.॥६॥ सोळ पहोर प्रभु देशना, कंठे विवर वस्तुल; मधुरष्वनी सुरनर सुणे,ताणे गळे तिलक अम्ल.। ७। हृदय कमळ उपसम वळे, बाळ्या रागने रोष: हिस दरे वनखंरने इदय तिलक संतोष

रत त्रइ गुण उज्जो, सक्ल सुगुग वीशराम, नामि कमळनी पूजना, करतां अविच्य धाम ॥५॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव अग जिणंद, पूजो बहु विघ रागशुं, कहे शुभवीर मुर्णिद । ९०। ॥ धुप पुजा ॥

पावक ग्रहे सुगघकुं, धुप कहावत सोय, उस्वेवत ध्रुप जिणद्कुं, कर्म दहन सब होय, ध्रप उस्वेवन जेह जन, प्रभु आगळ वहु मान, दुर्गधता दूरे टळे, पामे समर विमान हुतासनसे काष्ट ज्युं वेम प्यानानळ कर्म, तेणे मिसे खुप पुजा करे, जेमपामे शिवशर्म

॥ पुष्प पुजा ॥

प्रणीघाने सद्गती होवे,पुजाए केम नवि होय, सुमनश भावे दुर्गयता, पुजा पचाराक जोय राजानी वर मोगरो, चपक जाइ गुळाव,

केतकी डमरो बोलसीरी, पुजो भरीने छाव. ॥ वित्यवंदन करवानी विधि.॥

(प्रथम) इच्छामि खमासमणो, वंदिउ जाव-णिज्जाए; निसिहिआए, मध्येण वंदामी. ॥१॥पछी इच्छाकारेण संदिसह भगवान् चैत्यवंदन करुं.

[एस कहीने पछी चैत्यवंदन कहेवुं] [पछी]-जंकिंचि नामतिथ्यं, सग्गे पायालि माणुसे-लोए; जाइं जिणविंबाइ, ताइं सन्वाइं वंदामि ॥१॥ ॥ अथ नमुध्धुणं॥

नमुध्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं तिध्थयराणं सयंमंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससी-हाणं, पुरिसवरपुंडरिआणं, पुरिसवरगं यहध्थीणं, लो-गुत्तमाणं, लोगनहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपड्जोअगराणं, अभयदयाणं, चल्खुदयाणं, म-गादयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्म- देसिआणं, घम्मनायगाणं, घम्मसारहीणं, घम्मवरचा उरंत, चक्कवद्रीण अप्यद्विहयवरनाणं, दस्रणघराणं विभद्दछउमाण, जिणाणं, जायवाण, तिन्नाणं, ता रयाण, बुद्धाण, बोहियाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं सब्बन्नुणं सञ्बदरिसिण, सिव मयल मरुभ म णत मस्म्वय, मञ्जाबाह् मपुणरावित्ति सिद्धिगइ,नार्म घेय राण सपत्ताण नमोजिणाणं जियमयाण जेअ अई आमि हा जेअमविस्तंतिणा गएकाले, सपइअव ट्रमाणा म वेति विहेणवदामि ॥ (पछी)

॥ जावति चेइआइ ॥

जार्वित चेइआइ उद्वेश सहेश तिरिस लो एअ मवाइनाइयद इहमनो तथ्यसताई ॥ १ ॥ (पर्छी खमासमण देइ)

नावत कित्रमाहु भरदेख्य महाविदेहेस विमि तिमिपणओ तिविद्रेण तिवट विम्याण |श नमोऽईत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः।। (एटछं कह्या पछी स्तवन कहेर्बु. पछी हाथ जोडीने)

॥ जयवीअसय ॥

जयवीअराय जगगुरु, होउ ममं तुह पमाव ओ, भयवं भव निव्वेओ, मग्गाणुसारिआ इह फल सिद्धि, लोगविरुद्धच्चाओ गुरुज गपुआ परध्यकरणंच सुहगुरु जोगी तवयण सेवणा आभवमखंडा, वारि-ज्जइजइ विनिआण बंधणं वीअराय तहसमए तहवि मम हुज्जसेवा भवेभवे तुम्ह चंलणाणं दुख्खख्खओ कभ्मख्वओ समाहि मरणंच बोहिलामोअ संपज्जड मह एअंतुह नोह प्रणाम करणेणं सर्व मंगलमांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं, प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति सासनं. ॥ [पछी उभा थइने.]

॥ अस्हिन चेइआणं ॥ अस्हितचेइआणं, करेमिकाउस्सग्गं, वंदणव- त्तिआए पुअणवत्तिआए, सक्षारवित्तआए सम्माण वित्तिआए बोहिलामवित्तिआओ, निस्वस्गावित्तिआए सद्धाए मेहाए धीईओ धारणाए अणुप्पेहाए वहमा णीए टामि काउस्सगां

॥ अन्नथ्य उमसीएणं ॥ अन्नथ्यउमिष्णं नीसमिष्णं खासिष्ण छी एणं जंभाइएण उदहुएण वायनिसरगेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचाछेहिं सुहुमेहि खेल मचालेहिं सुहुमेहिं दिहिमचालेहि एउमाइएहि मा-गार्रहि अभगो अविराहिओ हुज्जमे काउरसगो, जाव अरिह्नाणं, भगवंताणं, नमुकारेणं नपारेमि तावकाय, युणेणं, मोणेणं, माणेण, अप्पाण, वोसिसमि (पछी एक नवकारनी काउस्सग्ग पाळीने थोय कहेवी) [पछी लमासमण देवं]

॥ चत्यवंदनो ॥

रकळकुशळ बली पुष्करावर्त मेघो, दुरित ति

मेरभानुं कल्पवृक्षोपमानुः भवजलं निधिपोत, सर्व सं-यत्ति हेतुः, संभवतु सतवंतः श्रेयंसे शांतिनाथ,श्रेयंसे पश्चिनाथ.॥

जयं जय श्री जीनराज आज, मळीयो मुज स्वामी; अविनाशी अविकार सार, जग अंतरजामी. रुपारुपी धर्म देव, आतम आरामी; चिदानंद चेतन विभु, शिव लीला पामी. सिद्ध बुद्ध तुज वंदतां, सकल सिद्ध वर्बुद्ध; रमो प्रभु ध्याने करी, प्रगटे आतम शुद्ध. काळ बहु थावर ग्रह्मा, भमीयो भवमांही; विगळेंद्री एळे गयो, थीरता नहीं काइ. फरी पंचेंद्री देहमां, वळी करमे हुं आव्यो; करी कुकर्म नरके गयो, दरशन नवि पायो. एम इनेता काळ करी, पाम्यो नर अवतार: हवे भवतारण तुं मळ्यो, भवजळ पार उतार.

सिद्धाचळनां चैत्यवदनो

विमळ केवळज्ञान कमव्य, कलीत त्रिभुवन हितकर्र सुरराज संस्तुत चरण पक्रज, नमो आदि जीनेश्वरं ll १ ॥ विमळ गिरिवर श्रुम महण, प्रवर गुण गण मुघरं, सुर असुर किन्नर कोडी सेवित,नमो आदी जिनेश्वरं ।। २ ।। करती नाटक कीन्नरी गण, गाय जीन गुण मनेहर, निर्जरावळी नमे अहोनिश,नमो आदी जिनेश्वरं ॥ ३॥ पुंडरिक गणपति सिद्धि साधी कोहि पण मुनि मनहरं, श्री विमठ गिरि-वर श्रुग मिद्धा, नमो आदि जिनेश्वर ॥थ। निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडि अनत ए गिरि-वरं मुगतिरमणी वर्षा रगे. नमो आदि जीनेश्वरं ॥ ५॥ पाताल नर सुरलोक मांही विमळ गिरिवर तो परं नहीं अधिक तिरथ तिरथपति कहे नमो आदि जीनेश्वर ॥ ६॥ एम विमय गिखर शिखर

मंडण, दुःख विहंडण ध्याइए; निज शुद्ध सत्ता सा-र्थनार्थे, परम ज्योतिने पाइए ॥ ७ ॥ जीत मोह कोह विछोह निद्रा, परमपदस्थित जयकरं; गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥

श्री शेञ्जंजय सिद्ध खेत्र, दीठे दुरगति वारे; भावधरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥१॥ अनंत सिद्धनो ए ठाम, सकल तिरथनो राय; पूरव नवाणुं रिखबदेव, ज्यां ठवीया प्रभु पाय॥शा सूरजकुंड सोहामणो, कवीड जक्ष भिराम, नाभिराया कुल मंडणो, जिनवर करं प्रणाम।।३॥

आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तोरुं नाम; ज्यां ज्यां प्रतिमा जीनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम १ शेञ्जंजे श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार; तारंगे श्री अजीतेनाथ, आबु रिखव झुहार॥॥ श्रष्टापद गिरि उपरे, जिन चोवीशी जोहें, मणिमय मुरत मानशुं, भरते भरावी मोय ॥शा समेतशिलर तिरथ वहां, ज्या विशे जिन पाय, वैभार गिरिवर उपरे, वीर जीनेश्वर राय ॥ ४॥ माहवघदना राजीयों, नामे देव सुपास, रिखब कहे जिन समरतां पहोंचे मननी आशा।।।।।।

।। श्री मीमंदिर स्वामीना चैत्यवंदनो ।।
श्री मीमंदीर वितराग, त्रीसुवन तुमे उपगारी श्री श्रेयाम पिता कुळे, वहु शोभा तुमारी।।।।।
घन्य धन्य माता मतकी जेणे जायो जयकारी, इन्यम न्यन विगजमान वंदे नम् नारी ।। २ ॥ घ नुप पाचश तहरी ए मोहीए मोवनवान, किस्तीविजय खमायनो विनय घरे तुम ध्यान ॥३॥
श्री श्री मंत्रीम जगधणी आ भरते आवोः

करणावंत परणा करी अमने बटावी ॥१॥ सक्छ

मक्त तुमे धणीए, जो होवे अम नाथ; भवोमक हुं छुं ताहरी, नहीं मेळुं हेन्ने साथ. ॥ २ ॥ सयल संग छंडी करीए, चारित्र लेइ्ग्रुं; पाय तुमारा सेवीने

शिव रमणी वरशुं. ॥३॥ ए अळगो मुजने घणोए, पुरो श्री मंदीर देव; इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो गुणगेह. ॥ ४॥

श्री आदिनाथ जिन चैत्यवंदन. आदिदेव अलवेसरु, विनीतानो सय: नाभि-

राया कुल मंडणो, मरुदेवां माय. ॥ १॥ पांचशें ध-चुष्नी देहडी, प्रभुजी परम द्याल; चौराशी लख्ख

पूर्वनुं. जस आयु विशाल. ॥२॥ वृषम लंछन जिन वृषधरुए, उत्तम गुण मणि खाण; तस पद पद्म सेवन थकी, लहिए अविचळ ठाग. ॥ ३॥ ॥ श्री शांतिनायजिन वैत्यवंदन. ॥

॥ श्रा शातनायाजन चत्यवदन. ॥ शांति जिनेश्वर सोलमाः अचिरा सुत वंदो; विश्वसेन कुळ नममणि, मविजन सुल कंदो ॥१॥
मृगहं उन जिन भाउखु, लाख वरस प्रमाण, हथ्यिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण ॥ १॥
चालीम धनुपनी देहहीए समचउरस संग्रण, वदन
पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कृत्याण॥ १॥
श्री प्रार्थनाथिजन चैत्यवंदन

आश पूरे प्रभु पार्श्वनायजी, त्रोहे भव पास, वामा माता जनमीयो, अही लक्षन जास ॥ ९ ॥ अश्वसेन मृत मुलकर, नव हायनी काया, काशी देश वणारसी पुण्ये प्रभु आया ॥ २ ॥ एकसो वरसनु आउखु ए पाळी पार्श्व कुमार, पद्म कहे मु के गया, नमता मुल निरवार् ॥ ३ ॥ श्री महावीरजिन वत्यवदन

मिद्धारथ सुत वंदिए, त्रिमलानो जायो, **क्ष** त्रिक्कडमा अवतर्यो[,] सुर नस्पति गायो ॥१॥ **मृग** पति लंछन पाउले, सात हाथनी काया; वहोत्तेर वर-सनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया. ॥ २ ॥ खिमावि-जय जिनरायनो ए, उत्तम गुण अवदात; सात बो-लथी वर्णन्यो, पद्मविजय विख्यात. ॥ ३॥

पदम प्रभुने वासुपुज्य, दोय राता कहीए;चंद्र-प्रभुने सुविधिनाथ, दो उजवळ लहीए. ॥ १ ॥ म-छीनाथने पारश्वनाथ, दो निला निरखा; मुनिसुब-तने नेमनाथ दो अंजन सरिखा. ॥२॥ सोळे जीन कंचन समाए, एहवा जिन चोवीस: धिर विमळ एं-ंडित तणो, ज्ञानविमळ कहे शिश. ॥ ३॥ ॥ श्री सिद्धाचळनां स्तवनो ॥

अकेकुं डगछं भरे, शेत्रुंजा सामी जेहः रि-खब कहे भव कोडनां, कर्म खपावे तेह ॥ १ ॥

गीतम सरला गुरु नहि, वळी वळी वद् तेह ॥ २॥ सिद्धाच्य समरु सदा, सोख देश मोजार, मनुष्य जन्म पामी करी, वंदु वार इजार ॥ ३ ॥ सोखं दे शमा मचर्यो न चढयो गढ गिरनार,शेञ्चजी नदी नाह्यो नहि, तेनो एळे गयो अवतार ॥ ४ ॥ शे-ञ्जजी नदीमा नाइने, मुख बांधी मुखकोश, देव जुगाधीश पूजीए, भाणी मन संतोष ॥ ५ ॥ ज-गमां तिरथ दो वहा, शेञ्जंजो गिरनार, एक गढ रिल समोमया, एक गढ नेमकुमार ॥६॥ सिद्धा चळ मिळि वर्या. मुनिवर अनंति कोह, ज्यां मुनि वर मुगते गया, बदु वे कर जोह ॥ श शेत्रुंजय

। स्तवन २ जुं ॥ आंखडीए रे में भाज शेचूजो दीहोरे,सवा-

गिरि महणो, मारुदेवीनो नंद, जुगलाधर्म निवार

को, नमो युगादि जीणद् ॥ ८॥

लाल टकानो दहाडो रे; लागे मने मीठो रे. स-फळ थयो रे मारा मननो उमाह्यो, वाला मारा भ-वनो संशय भाग्यो रे; नरक त्रिजंच गति दूर नि-चारी, चरणे प्रभुजी ने लाग्यो रे॥ शे०॥ ए आंकणी ।। मानव भवनो लाहो लीजे, वाला मारा देहडी पावन कीजे रे; सोना रुपाने फुलडे वधा-वी, प्रेमे पदक्षिणा दीजे रे ॥ शे० ॥ २ ॥ दुधडे ्रपलाळी ने केंसर घोळो, वाळा मारा श्री आदेश्वर पुज्या रे: श्री सिद्धाचळ नयणे जोतां, पाप मेवा-श्री धुज्या रे ।।शे०।। ३ ।। श्रीमुख सुघर्मा सुरपति आगे, वाळा मारा वीरजिणंद एम बोळे रे; त्रण भुवनमां तिरथ मोटुं, नहि कोइ शेत्रूंजा तोले रे॥ ।शे०। इंद्र सरीखा ए तिरथनी, वाला मारा चा-करी चित्तमां चाहे रे; कायानी कायरता काढी, सू-रजकुंडमां नाह्या रे। शे०।५। कांकरे कांकरे श्री सिद्धसेत्रे, वाला मारा साधु अनता सिच्या रे, वे माटे ए तिरथ महोद्द, उद्धार अनता कीघा रे।शे॰ १६१ नामिराया सुत नजरे जोता, वाला मारा मेह अमीरम बुट्या रे, उदयरतन कहे आज मारे पो ते, श्री आदेसर तुट्या रे ।शे॰ ।७। ॥ स्तवन ३ जु ॥

मारु मन मोह्यं रे श्रीसिद्धाचळे रे, मारुं मन में ह्यू रे श्री विमलाचळे रे ॥ देखीने हरसित होय विधि स्यु कीजे रे जात्रा एइनी रे, भव भ-वनां द ल जाय ॥ मारु । १। पंचमे आरे रे. पा वन कारणे रं ए समी तिरथ न कीय, मीटी म-हीमा रे जगमा एहनो रे आ भरते अहियां जोय मार्च ।।२।। ए गिरि भा या रे जिनवर गणधरा रे. मि या माधु अनन क्रण क्रम पण ए गिरि फ रमता र होवे करमनी शात ॥मारु०।३। जनवर्म

ते साचो जाणीनेरे मानव तिरथ ए स्तंबः सुरीनर कीन्नर नृप विद्याधरा रे, करता नाटा हो रंग ॥मारं० ॥थ॥ धन धन दहाडोरे, धन वेळा घडी रे, धरीए हृदय मोझारः ज्ञानविमळसुरि गुण एहना घणा रे, कहेतां न आवेरे पार ॥ मारूं० ॥५॥

॥ स्तवन ४ श्रुं ॥

शेखगर तुं शीदने आच्यो-ए देशी

अवो गिरि सिद्धाचळ जइए. पाप हरी नि-रमळ थइए; कुमति कदागर तजीए, आवो गिरि सिद्धाचळ जइए ११। तारण तिरथ दो कहीए, था-वर जंगमने लहीए; लोकोतरने नित मजीए ॥ आवो० १२।परमपद अलवाणे पय चरीए, पुन्य घणुं लामे मरीए; सिद्ध अनंता कांकरीए ॥ आवो० १३। सोना रुपाने फुले, मुगताफळ अमुलख मूले; पू-जीने नाम नहीं भले॥ आवो० ॥ ४॥ च- चण सिद्ध अनंता ।म॰ सं॰। स्ट मासी घ्यान ष रावे, शुकराजानु राज ते पावे, विहरंतर शब्ब हरावे, शेञ्चजो नाम षरावे, ।स॰ सं॰। प्राणी घ्याने भजो गेरि जाचो, तिर्यंकर नाम नहीं काचो, मोह रायने लागे तमाचो, शुमवीर विमळगिरि साचो-स्नेही सत ए गेरि सेवो, चोदस्वेत्रमां तिरथ नहीं एवो ॥ स॰ सं॰॥

स्तवन ६ दुं

आवो सखी मिद्राचठ जहए गेरिवर मेटी सुम लहीए जो जिनआणा शु रहीए, आवो सखी मिद्धाचठ जहण ॥१॥ मिद्ध सनतानो ठाम, एहवी जिनवरनी वाण, जाणे आगमना जाण ॥ आवो मखी २॥ ए गेरिना गुण कहुं केता, पार न पामे केउली तेता कोड पूख देशना देता ॥ आवो रावी० ३॥ मधवी प्रेमाशा आवे, राजनगरनो मध लावे; जात्रा नवाणुं करे भावे. ॥आवो सखी०४॥ जात्रा नवाणुं करो भावे, एहवो अवसर फरी नावे; आतम शिवपुरमां जावे. ॥ आवो सखी० ५॥ जा-त्रानी हुंशो छे भारी, लागी अनुभवनी टाळी; गेखिर दिसन बलिहारी. ॥ आवो सखी० ६ ॥ अदारसे शत्याशी वरसे, गेरी गुण गाया मन हरखे, मणिउद्योत गेरी गुण गणशे. ॥आवो सखी० ७॥ स्तवन ७ मुं.

सिद्धाचळगेरि भेटयारे, घन्य भाग्य अमारां॥ ए आंकणी ॥ ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां न आवे पार; रायण रीखम समोसर्या स्वामी, पुरव नवाणू वारारे ।घ० १। मुळनायक श्री आदि जिन्थर, चोमुख प्रतीमा चारा; अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावे, समक्ति मुळ आधारा रे ।घ० २। याव भगः तिशुं प्रसु गुण गातां, अपनां जनम सुधारा;जात्रा

करी भविजन शुममावे, नरगति दुर्गति वारारे ।घ० ३। दुर देशातर्थी ई आब्यो, धवणे सुणी गुण नोरा, पनीन उद्धारोने बीस्ट तुमारो, ए तिरय ज गसारारे । ५० ४। अदारसें त्यासी मास अषाहो, वद आउम मोमवारा, प्रभुके वर्ण पसाययी संघर्मा, खेमारतन प्रमु प्यारारे । १० ५।

स्तवन ८ मु हुगर पारों में तो मोती है वधार्च रे (२) हुंगर फरमीत पाप मीटत हे, गीरीवर नीरखत आ-नद याउ रे ।हुगरः। कांककरे सिद्धा अनंता, आदिनाय तणा गुण गाउ रे ।हुगरः। स्राजकुदमां नाही निर्मठ यहए रे क्री पूजाने आगी रचावंरे हिगरः। हाथीनी पोळमां अस्हितजीने देहरे रे. धरी नेवेदने भावना भावुं रे । हुंगरः। नयु क त्याण कवी दीपनो श्रावक, कहे श्रद्धायी समकीत पाउं रे ॥ दुंगर०॥

स्तवन ९ मुं.

क्रंबर गथारो नजरे देखतांजी.-ए देशी.

समक्ति दार गभारे पेसतांजी, पाप पडळ गयां दुर रे; मोहन मरुदेवीनो लाडणोजी, दीठो मीठो आनंद पूर रे ॥ समकित. ॥ आयु वरजीत साते करमनीजी, सागर कोडाकोडी हीण रे; स्थिति पदम करणे करीजी, बीर्य अपूरव मोघर लीध रे ।।सपिकत.।। भुंगळ भागी आद्य कषायनीजी, मि-थ्यात मोहँनी सांकळ साथ रे; वार उघाडयां सम संवेगनांजी, अनुभव भवने बेठो नाथ रे।।समिकता। तोरण बांध्यं जीवदयातणुंजी, साथीओ पूर्यी सेर-धारुप रे: धुप घटी प्रभु गुण अनुमोदनाजी, धीगुण मंगळ आठ अनूप रे ।। समकित ।। संवर पाणी अंग प्रखालणेजी, केसर चंदन उत्तम ध्यान रे; आतम-

गुण रूपी मृगमद महमहेजी, पंचाचार कुसुम प्र-

घान रे ॥समकित ॥ भावपूजाए पावन आतमाजी, पूजो परमेश्वर पुन्य पवित्र रे, कारण जोगे करज निपजेजी, खीमाविजय जिन आगम रीतरे ॥स०॥

॥ स्तवन १० मुं॥

शीरे सिद्धाचळ मेटवा, मुज मन अधिक उमायो, रिखवरेव पूजा करी, छीजे भवतणो लाही ए - 11रे । १। मणीमय मुस्त श्रीरिखमनी ते नि पारे अभिराम, भुवन कराव्यां कनकर्नां, राख्या मरते नाम ॥ शीरे० । श नेम विना त्रेवीश प्रमु, आव्या मिडलेत्र जाणी शेत्रंजा समो तिरय नहीं, वोह्या सीमंटिखाणी ॥ सीरे॰ ।३। पूरव नवार्थ ममोमर्या, म्वामी रिखभ जीनंद, राम पांडव मुगते गया, पाम्या परमानद ॥ गोरे० । ध पूरव पून्य पमायथी पुहरिक गिरि पायो, कातिविजय हरखे करी, श्री मिद्धाचढ़ गायो ॥ शीरे० ५॥

॥ स्तवन ११ मुं॥

तुमे तो भले बिराजोजी, श्री सिद्धाचलके नासी: सांहिब भले बिराजीजी ॥ ए आंकणी ॥ मारु देवीनो नंदन रुहो, नाभीनरींद मल्हार; जुगला यर्भ निवारण आव्या. पूर्व नवाणुं वार ॥ तुमेतो० **। शमू अहेवने सनमुख राजे, पुंडरिक गणधार; पंच** कोडस्यं चैत्रीपुनमे, बरीआ शिववधु सार ॥तुमेतो० । १३। सहसकोट दक्षिण बिराजे, जिनवर सहस चोवीस: चउदर्से बावन गणधरनां, पगलां पूजो जगीश ॥ तुमेतो०॥ ३॥ प्रभु पगलां रायण हेठे, पूजी परमानंद; अष्टापद चउवीस जिनेश्वर, समेत वीस जिणंद ॥तुमेतो० ॥४॥ मेरुपर्वत चैत्य घणेरा, च॰ उमुख विंव अनेक; बावनजिनालाना देवळ निरखी, इरख लहु अतिशेक ॥तुमेतो०॥४॥ सहेसफणा ने सामळा पासजी, समोवरसण मंडाणः छीपावसीने

खड़तरवसी काइ, प्रेमावसी परमाण । स्तुमेती । । सी सवत अदार ओगणी पचाशे, फागण अप्टमी दीन, **उज्यक्षे उन्वळ हुओ, गिरि फरस्या मुज मन,** ।।तुमे॰ ।।७॥ इत्यादिक जिनवीव निहाळी, साम ळी मिद्धनी श्रेण, उत्तम गिरिवर केणीपेरे विसरे, पद्मविजय कहेजेण ।।तुमे० ।।८।। ॥ स्तवन १२ मु॥ विमलाच्य वामी मारा ब्हाला, सेवकने वि-सारो नहीं विमारो नहीं, जळ विण मीन दु स

मारो नहीं विमारो नहीं, जळ विण मीन दु स अति पामे, जीनद आप जाणो सही, जाणो सही ॥ ए टक् ॥ दु च हरनारा मिवजन प्यारा, शरणे हु मटाराज चार चोर मुज केहे पहीया, पुन्य र तनन राज प्रभुजी हो पुन्य रत्नने काज ॥सेवकः॥ पापी चडाटो पकडी तुज, माल हरी लेनार, प्रभु जी जो मुज हारे आवो, नो छु ठगरनार, स्वामी- जी तो छुं उगरनार, ॥सेवक्रा जनम मरणना हु: ब बहु वेड्यां, तोए न/आब्यो पार; ते हु: खने दूर करवा कारण; आव्यो तुज दरबार, दादाजी आव्यो तुज दरबार. ॥सेवक०॥ अरजी उर धरी नेह नजर करी. सेवकनी करो सार; कृपातणा ए सिंधु तम विण, कोण उतारे पार, प्रभुजी कोण उ-तारे पार. । सेत्रंक ।। भव भय भं जन नाथ निरंजन करो कठंण करमनो नाश, पद पंकज ग्रहे पाण म-धुकर, पूरो मननी आश; प्रभुजी पुरो मननी आ-श. ॥सेवक०॥ ॥ स्तवन १३ मुं॥

माता भरुदेवाना नंद, देखी ताहरी सुरती मारुं मन लोभाणुंजी, मारुं दील लोभाणुंजी ॥ ॥देखी०॥ ए टेक.॥ करुणा नागर करुणा सागर, काया कंचनवान; धोरी लंछन पाउले कांइ, धनुष पाचसे मान ॥माता० १॥ त्रिगहे बेशी धर्म कहतां, सणे पर्पदा बार, योजन गामिनी वाणी मिठी, व रसती जळघार ।।माता० २।। उर्वशी रूडी अपछरा ने, रामा छे मन रंग, पार्चे नेपुर रणझणे, कांद्र करती नाटारम ।।माता० ३।। तुही ब्रह्मा तुही वि घाना, तु जग नारणहार, तुज सरिखो नही देव जगतमां, अरबहीआ आघार ॥ माता० ४ ॥ तही भ्राता तुही त्राता, तुही जगतनो देव, सुरनर कि-न्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव ॥मार्ता॰ ५॥ श्री मिद्राच्य तिरथ केरो, राजा रिपम जिणद, कीर्ति करे भाणेक्सुनि ताहरी, दाठी भवभय भद्र ॥ माता० ६॥

्।। स्तवन १२ मु॥

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगधी काय,

कलवृक्षपरे तास इंद्राणी नयन जे, मृंगपेरे लपटाय. ¹⁸¹ रोग उरोग तुज निव नडे, अम्रत जे आस्वाद; तेहथी प्रतिहत तेहमांनुं कोइ नवि करे, जगमां तुमशुं वाद. ।२। वगर घोइ तुज निरमळी, काया कंचनवान; नहि परस्वेद लगार तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुं ध्यान. ॥३॥ राग गयो तुंजमन थकी, तेहमां चित्त न कोय: रुधिर अमिषथी रोग गयो

तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय. ॥४॥ श्वासोश्वास कमळ समो, तुंज लोकोतर वाद; देखे न आहार निहार चर्मचक्षु धणी, एवा तुज अवेदात ॥ ५॥ चार अतिशय मुळथी, ओगणीश देवनां कीध; कर्म खप्याथी अग्यार चोत्रीस इम अतिशया, समवायंगे प्रसिद्ध. ॥६॥ जीन उत्तम गुण गावतां गुण आवे निज अंगः पद्मविजय कहे-एम समय प्रभु पाळजोः

जेम थाउं अक्षय अभंग. प्रथम जीनेश्वर. ॥ १॥

॥ तिर्थमाळातुं स्तवन ॥

शेडुंजे रिसम समोसर्या, मला गुण भर्या रे, सिध्या साधु अनत, तिरथ ते नमु रे त्रण क ल्याणक तिहा थया, मुगते गया रे, नेमीश्वर गि रनार ॥ तिस्य ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि शेहरो रे भरते भरात्र्या विव ॥ तिस्य ॥ २ ॥ आबु चोमुख अति मलो, त्रिमुबन तीलो रे,विमल वसे वस्तुपाठ ॥ तिरय ॥ ३ ॥ समेतशिखर सो हामणी रिज्यामणी रे सिध्या तिर्धेकर वीस ॥ तिस्य ॥ २॥ नयरी चपा निरखीए, इइडे हेर-सीए रे मिध्या श्री नामुपूज्य ॥ तिरय ॥ ५ ॥ पुरव िंग पावापुरी, रिक्के मरी रे, सुगति गया महाबीर ॥ तिरथ ॥ ६॥ जेसलमेर झुहारीए, द्राव वारीए रे अस्हित विंव सनेक ॥ तिस्थ ॥ ७॥ वांकानेरज वदीए, चीर नदीए रे, असि-

ंचासरो रे: फलोधी थंभण पास. ॥ तिरथ. ॥९॥ ' अंतरिक अंजावरो, अमीझरो रे; जीरावलो जग-नाथ. ॥ तिरथ. ॥ १० ॥ त्रिलोक्य दिपक देहरी, जात्रा करो रे: राणकपुरे रे सहेस. ।। तिरथ.॥१९॥ नाडुलइ जादवो, गोडी स्तवो रे; श्री वरकाणो पास. ॥ तिरथ. ॥ १२ ॥ नंदिश्वरनां देहरां, बावन भलां रे: रुचक कुंडले च्यार च्यार. ॥ तिरथ.॥१३॥ सास्वति असास्वति, प्रतिमा छती रे; स्वर्ग मृत्यु गाताळ. ॥ तिरथ. ॥ १४ तिरथ जात्रा फळ तिहां,

होज्यो मुज इहां रे; समयसुंदर कहे एम. ॥

तिस्थ. ॥ १५ ॥ ॥ श्री पंचतीर्थनुं स्तवन ॥

[चोवीशचोकनी देशी.] हे साहेबजी. नेक नजर करी नाथ सेवक्रने आलो प्रमु तुज मुरति मोहनवेली, पुजे सूर अ-पछरा अलबेली, वर धनसार केसरशु मेली ॥ है साहेबजी ॥ १ ॥ मिछाचळतिर्थ मिन सेवा.चीद क्षेत्रे तिरय नहीं एवो, एम वोले देवाधि देवो ॥ हे साहेक्जी ॥ २॥ गिरनारे जइए नेम पासे, इहा भविजन सिद्धि जागे, जस ध्याने पाति-कड़ा नासे ॥ हे साहेवजी० ॥ ३॥ आर्बुगढे आटिजिनगया, नेमनाथ शिवादेवी जाया. जस चोत्र इद्रे गुण गाया ॥ हे साहेवजी० ॥४॥ वळी समेत्रियके जगनाइश गया मोक्षे जिनराज वीश, ध्यय याचे भविजन निश दीश ॥हे साहेबजी०॥ गरा। अणपर सङ्ख रमे अर्ग प्र**म् वरीया शिव** वर् अभागे अतिभा पूजना दोवाळी ॥ हे सा हेर्न ॥भाग आत तिर्थ प्रमा मनरगे, बळी जो प्रथुने नव अंगे; कहे धर्मत्रंद अति उसंगे। । हे साहेवजी० ॥७॥

॥ गिरनारजीनं स्तवन ॥

ं तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंथ रे ॥श्रीतमजी॥ आठ भवनी प्रीतही तोही तंत ॥मारा प्रीतमजीना नवमे भव पण नेह न आण्यो मुज रे ।।प्रीत्तमजी ा तो शें कारण एटले आवंबुं तुज ।मारा प्रीतमजी । एक पोकार सुणी तीर्यंचनो इम रे ॥ शीतमजीवा मुको अवळा रोती प्रभुजी कीम ।पारा प्रीतमजी । खट जीवना रखवाळमां सीरदार रे ॥ प्रीतमजी ।।। तो केम टळवंती स्वामी मुको नार ॥ मारा प्रीतम-जीः।। शिववधु केरं एवं केवं रुप रे ॥प्रीतमजीः।। मुज मुकीने चित्तमां धरी जिन भूप॥ मारा प्रीत-मजीं शा जीनजी लीए सहसावनमां वत आर रे ।।प्रीतमजी०।। घातीकरम खपाबीने निरधार ।। मारा

।। प्रीतमजी० ।। जाणी राजुल इम प्रतिज्ञा लीघ ।। मारा प्रीतमजी०।। जे प्रमुए कीघु करव तेह रे ।। प्रीतमजी ।। एम कही व्रतघर यह प्रमु पासे जेह श मारा शीतमजीं ।। प्रमु पहेळां निज सोक्यनु जोवा रुप रे ॥ श्रीतमजीना केवळज्ञान लडी थह सिक्र स्वरूप ।। मारा पीतमजी ।। शिववध्र वरीसा जिनवर उत्तम नेम रे ॥ प्रीतमजी० ॥ पद्म फहे त्रभु गर्ना अविचय प्रेम ॥ मारा प्रीतमजी० ॥ ॥ ममेतिशिषरजीनुं स्तवन ॥ जइ पूजो लाल, समेनशिखर गिरिजपर वास जी नामला जीन मगति लाठ, करतां जिन पद पावे टले भन आनळा ॥ ए आक्रमी ॥ उहरी पाळी दरि सण क्रीए, भव भव सचित पात्रीक हरीए ॥ निज अतम पुन्य रमें भरीए ॥ जह पुजो लालः ॥शा

जइ पूजो लाल० ॥ २ ॥ जीहां शीवरमणी वरवा आव्या, अजीतादिक वोसे जिनस्या ॥ बर् मुनिवर जिन शिववधु पाया ॥ जइ पूजो लाल॰ ॥३॥ तेणे ए उत्तम गिरि जाणो, करो सेवा आ I-मकरी स्थाणो ॥ ए फरी फरी नहीं आवे टाणो ॥ जइ पूजो लाल० ॥४॥ तुमे घन कंचननी माया, करता असुची कीधी काया ॥ केम तरशो वीण ए गिरि राया ॥ जइ प्जो लाल० ॥ ५॥ इम शुभ मति वचन सुणी ताजा, ए भजो जग गुरु आनमराजा। गिरि फरशे धरी मन सुत्री माजा॥ जइ पूजा ळाळ० ॥६॥ संवतमर रिखि गजवंद समे, फागण सुदी तीज बुधवार गमे।। गिरि दरशन क-रनां चित्त रमे ॥ जइ पूजी लाल ।। श। प्रसुपद

(83)

ए गिरिवर नित्य शेवा कीजे, जीम शीवसुखडां

करमां लीजे ॥ चिदानंद सुधारस नित्य पीजे ॥

मीतमजी ।। केवळ रिद्धि सनंती प्रगट कीष रे ॥ पीतमजी॰ ॥ जाणी राजुल इम प्रतिज्ञा लीव ॥ भारा भीतमजी०॥ जे प्रमुए कीष्ट्र, करव वेह रे ॥ प्रीतमजी ।। एम कही वतंघर थई प्रमु पासे जेह ॥ मारा भीतमजीवा प्रभु पहेला निज सोरयनुं जोना रूप रे ॥ प्रीतमजीना केनळ्वान लही यह सिद्ध स्त्ररुप ॥ मारा पीतमजी ।। शिववध्रं वरीआ जिनवर उत्तम नेम रे ॥ प्रीतमजी०॥ पद्म कहे प्रभू गुली अविचळ प्रेम ॥ मारा प्रीतमजी० ॥ ॥ समेनिनिषरजीतु स्तवन ॥

जह पूजो लाल, समेतिशिखर गिरिडपर पास जी शामला, जीन भगित लाल, करतां जिन पद पावे टेंग्र भव आवळा ॥ ए आंकणी ॥ छहरी पाळी दरि सण क्रीए, भव भव संचित पातीक हरीए ॥ निज आतम पुष्य रमे भरीए ॥ जह पुजो लाल॰ ॥शा ॥५॥ देखी अचंबो श्री सिद्धाचळेजी, हुआ असं-स्य उद्धार रे; आज दीन पण एणी गिरिजी, झ-गमग चैत्य उद्धार रे॥ चउ०॥६॥ रहेशे उत्सर-पीणी लगेजी, देव महिमा गुण दाखी रे; सिंहनी सद्यादिक थीरपणेजी, वसुदेव हींडनी साख् रे॥ चउ०॥७॥ केवळी जिनसुख मे सुण्युंजी, एणे वीधे पाठ पडाय रे; श्री शुभवीर वचन रसेजी, गा-या रिखम शीवठाय रे॥ चउ०॥८॥

॥ आबुजीनुं स्तवन ॥

(कोइ छो परवत धुषछो रे-॥ देशी)

आबु अचळ रिळआमणो रे लोल, देलवाडे मनोहांर सुलकारी रे; वादळीए जेसर घरयुं रे लोल, देवळ दीपे च्यार बलिहारी रे. भाव धरीने भेटीए रे लोल ॥ आंकणी. ॥ बार पादशाह वश करी रे लोल, विमळ मंत्रीसर सार; ॥ सु० ॥ तेणे प्रासाद पद्मनणी सेवा, करतां नित्य लहीए शिव मेर्ने॥ कहे रुपविजय मुज ते हेवा ॥ जद्द पूजो लाल॰ ॥८॥ अष्टापदनं स्तवन

(इवर गमारी नमरे देखवांशी -ए देखी)

चउ अठ दश दोय वंदीएजी, वरत्मान जग दीन रे अष्टापदगिरि उपरेजी, नमतां वाघे जगीश र ॥ चड०॥शा भरत भरतपति जिन मुखेजी, उचरीयां वन बार रे, दर्शन शुद्धिने कारणेजी, चो वीम प्रभुनो विहार रे ॥ चउ ।। ।। उचपणे कोश तीग कहाजी, योजन एक विस्तार रे, निज निज मान श्रमाण भरावीयाजी बीब स्वपर उपगार रे चउ ॥३॥ अजीत्तादिक चउदा हीणेजी, पश्चिमे पउमाइ आउरे, अनन आदे देश उतरेजी, पूर्वे रि ग्वभ बीर पार रे ॥ चउ० ॥था रिसम अजीत प्वे रह्याजी ए पण आगमपाउ रे, आत्मशक्ति करे जात्राजी ते भवमुक्ति वरे हणी आउ रे ॥ घट०

ी थाय ॥सु.॥ लाख अहार खरचीआ रे लोल, घन वन एहनी माय ॥व,॥ आबु. ॥७॥ मुळनायक ने-मेसर रे लोल, जन्मथकी ब्रह्मचार ॥ सु. ॥ निज उत्ता रमणी थया रे लोल, गुण अनंत आधार ॥ ब ॥आबु. ॥८॥ च्यारेंस ने अडसर भला रे लोल. जिनवर विव विशाळ ॥सु.॥ आज मले में मेटीआ रे लोलः पाप गयां पानाळ ॥व,॥आबु,॥९॥ रिखम ॥ तुमयी देहरे रे लोल, एकसो पीस्ताळीश विंव ासु.।। चोमुल चैत्य जुहारी रे लोल, मरुधरमां जीम अंव ॥व.॥आबु. ॥१०॥ वागुं काउससम्मीआ तेहमां रे लोल, अगन्याशी जीनराय ॥सु.॥ अच-लगढे बहु जिनवरा रे लोल, वंदु तेहना पाय । ब. ॥आंबु, ॥११॥ घातुमयी परमेश्वर रे लोल, अद-भुत जास स्वरूप ॥ सु ॥ चउमुख जिन वंदतां रे लोल, थाए जिनगुण भुप ॥व.॥आबु.॥१२॥ अदा-

निपाइओ रे लोल, रिखम जगदाघार ॥ ब॰॥ आर्ड॰ ॥१॥ तेह चैत्यमां जिनवरु रे लोल, आउर्सेने हो तेर ।। सुन। जेह दीठे प्रमु सामरे रे छोल, मोह क्यों जीणे जेर ॥ व० ॥ अख़० ॥ शा द्रव्य भरी धरती भली रे लोल लीघो देवळ काज ॥ स॰ ॥ चैत्य तिहां महाविउ रे लोल, लेवा शिवपुर राज ।। बन्।।आबुन्।।३।। पदरसे कारीगरे रे लोल, दी वीधरा प्रत्येक ॥ सु ॥ तेम मरदनकारक वळी रे लोल, वरतुपाछ ए विवेक। व ॥अ।बु ॥४॥ कोरणी वोरणी तिहा करो रे लोल, दीयं वने ते वात ॥ ध्रु॥ पण निव जाए मुन्वे कहि रे लोल सुर गुरु सम विस्यात । त्रााआबु ॥ पा। त्रणे वरसे निपन्यो ने लोल न प्राप्ताट उत्तरा । स्मु ॥ बार कोही बेपन छ यन र लोल धरन्याहाय उछांग ।(प आबु।।६।। टेराणी जराणीना गोमशा 🕏 रोल देखना **इरख**

धन एहनी माय ॥व,॥ आबु. ॥७॥ युळनायक ने-मिसर रे लोल, जन्मथकी ब्रह्मचार ॥ सु. ॥ निज सत्ता रमणी थया रे लोल. गुण अनंत आधार ॥वः ।।आबु. ।।८।। च्यारेंसें ने अडसर मला रे लाल, जिनवर विव विशाळ ॥सु.॥ आज मछे में भेटीआ रे लोल पाप गयां पाताळ ॥व,॥आबु,॥९॥ रिखभ षातुमयी देहरे रे लोल, एकसो पीस्ताळीश विंब ।।सु.।। चोमुख चैत्य जुहारी रे लोल, मरुधरमां जीम अंव ॥व.॥आबु. ॥१०॥ बागुं काउस्सग्गीआ तेहमां रे लोल, अगन्याशी जीनराय ।।सु.॥ अच-, लगढे बहु जिनवरा रे लोल, वंदु तेहना पाय। ब. ।।आब. ।।११।। घातुमयी परमेश्वर रे लोल. अद-भुत जास स्वरूप ॥ सु ॥ चउसुख जिन वंदतां रे लोल, थाए जिनगुण भुप ॥व.॥आचु.॥१२॥ अदा-

रसंने अदारमा रे लोल, चइतर वदी त्रीज दीन शसु।। पारणपुरना सघशु रे लोल, प्रणमी मयो धन धन ॥व ॥आव ॥१३॥ तेम शान्ती जगदींसरु रे लोल, जात्रा करी अद्भुत ॥सु॥ जे देखी जिन सां मरे रे लोल, सेव करे पुरहुत ॥व ॥ आबु ॥ १४॥ इम जाणी आबुतणी रे लोल, जात्रा करणे जेह ॥सु॥ जिन उत्तम पद पामणे रे लोल, पद्मविजय कहे तेह ॥व ॥आबु ॥१५॥

॥ श्री मीमंद्रस्थामीनुं स्तवन ॥

सुगा नंदाजी, श्री मंदीर परमातम पासे जा ज्यो मुज विनवही, पेम घरीने एणीपरे तुमे संम ळावजो॥ जे प्रण्यभुवननो नायक छे, जंस चोसठ इद्र पायक छे ज्ञान दिरमण जेहने खायक छे॥ सुणो ॥१॥ जम क्चनवरणी काया छे, जस घोरी लखन पाया छे, पुहिस्किगिरी नगरीनो राया छे॥

(44) सुणो. ॥२॥ बार प्रखदामांय बिराजे छे, जस चो-त्रीस अतिशय छाजे छे; गुण पांत्रीस वाणीए गा-जे छे।।सुगो.।।३।। भविजनने ते पडिबोहे छे, तुम अधिक शितळ गुण सोहे छे; रुप देखी भविजन मोहे छे ।।सुणो.।।था। तुम शेवां करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसिओ छुं; महा मोहराय कर फ-सियो छुं ।।सुणो. ॥५॥ पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तम आणा खडग कर ग्रहीओ छे; तेथी कांइ-क् मुजथी हरीयो छे ।।सुगो. ।।६।। जिन उत्तम पुंउ इवे पुरो, कहे पद्मविजय थाउं शुरो; तो वाघे मुज मन अति नुरो ॥ सुणी. ॥ ७ ॥ राणकपुरनं स्तवन.

श्री राणकपुर रविआमणुं रे लोल, श्री आ-दीश्वर देव मन मोह्यं रे॥ उत्तंग तोरण देहरं रे

लोल, निरखीजे नित्य मेव ॥मन०॥ श्री०॥१॥ च-

॥ श्री सीमद्रस्तामीनुं स्तवन ॥

सुगा चदाजी, श्री मदीर परमातम पासे जा-ज्यो, मुज विनवही, पेम घरीने एणीपरे तुमे संभ-ळावजो॥ जे त्रण्यभुवननो नायक छे, जस चोसठ इद्र पायक छे ज्ञान दिरमण जेहने खायक छे॥ सुणो ॥१॥ जम कचनवरणी काया छे, जस घोरी लक्ष्म पाया छे पुहरिकगिरी नगरीनो राया छे॥

भाग २ जो.

श्री रिखवदेवनुं स्तवन. (महाविदेह क्षेत्र मोहामणुं —ए देशी.)

जगजीवन जग वहालहो, मारुदेवीनो नंद गल रे; मुल दीठे सुल उपजे, दरशन अतिही आ-ंद लाल रे ॥जग. ॥१॥ आंखडो अंबुज पांखडी, अष्टमी ससी सम भाल लाल रे; वदन ते शारद चंदलो, वाणी अति रसाळ लोल रे ।।जग. ॥२॥ लक्षण अंगे विराजतां, अडहीय सहम उदार लालरे; रेखा कर चरणादिके, अभितर नहीं पार लाल रे ।।जग.।।३।। इंद चंद्र रवि गिरितणा, गुण लइ घडीयुं अंग लाल रे; भाग्य कियां थकी आवीयुं, अचरि-ज एह उत्तंग लाल रे ।।जग.।।थ। गुण सघळा अंगे कयी, दूर कयी सिव दोष लाला रे; वाचकजश विजये थुण्यो, देजो सुखनो पोख लाल रे।जग. ।५।

उवीम मंहप चन दीसे रे लोल, चौमुख प्रतिमा चार ॥मन०॥ त्रिमुवन दीपक देहरं रे लोल, स मोवड नहीं मसार ॥मनवाश्रीवाश। देहरी चउ-ग/ी दीपती ने लोल. मांहयो अद्यपद मेर ॥मन ॥ मले झहायीं मायरा रे लोल, सुनों की सबेर ।मनः।।श्रीः।।।। देश जाणी सो देहरां रे लील, मोरो देश मेवाह ॥मन०॥ लाल नवाणु लगावीयां रे लेल धन धरणे पोखाइ ॥मन०श्री०।।शा सर-तर १च्छिही म्बांत्रश्च रे लोल, निरस्तां सुस थाप १.मन ॥ पाच प्रामाद बीजा वळी रे छोछ, जोतां पान्त जाय ॥मनवा श्रीवापा आज स्तारव हु यो र लोल, आज ययो रे आणंद।।मन्।। यात्रा करी जिमार तणी रे लोल, दूर गयुं दु स दद ॥मन ॥ तीत्य ॥ मवत मोळने छोहोतरी रे लोल, मानम मान मोझार ॥मनः।। राणकपुर यात्रा करी र लोल, ममयसुद्र सुस्रकार । सन० श्री ०। ७।

गिंध लही पंथ निहाळशुं रे, ए आशा अविहंब, ए जन जीवे रे जीनजी जाणजो रे, आनंदघन उत अंव. ॥ पंथहो. ॥

श्री संमवनाथनुं स्तवनः

साहिब सांमळो रे, संमव अरज अमारी; भ-वो भव हुं भग्यो रे, ना लही सेवा तुपारी; नर-कनी गोदमां रे, तिहां हुं बहु भव भमोओ, तुम विना दुःख सह्यां रे, अहार्निश क्रोघे धमधमीओ॥ साहिब. ॥ १॥ इंदी वश पडयो रे, पोळ्यां वृत न-वी हुंशे, त्रस पण निव गण्या रे, हणिया थावर हुंशे, वृत पण चित नवी धर्यी रे, बीजुं माचुं न बोलुं; पापनी गोठडी रे, तिहां में हैडछं खोल्युं. ॥ साहिब. ।। र ।। चोरी में करी रे, चीविह अदत्त न टाळ्युं; श्री जिन आणशुं रे, में नवी संजभ पाळ्युं; मधुक-रतणी प^{रे रे}, शुद्ध न अहार गवेख्यो, रसना लाल- श्री अजीतनाय्नुं स्तवन गाई पम पोग्न रे भी विपन्गचळे रे --ए देशी

पंयहो निहार्छ रे बीजा जीनतणो रे. अजी न अजीत गुण घाम, जे वे जीत्या रे तेणे हुं जी तियो रे, पुरुष किस्यं मुज नाम ॥ पंथहो ॥ १॥ चरम नयण करी मारग जीवतो रे मूल्यो सपछ संसार जेणे नयणे करी मारग जोइए रे. नयण ते दिय विचार ॥ पेथहो ॥ २॥ पुरुष परपर अनु भव जोबता रे. अधो अध प्रलाय, वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, चरण घरण नही ठाय पंथडो नर्क विचार रे बाद परपरा रे, पार न पहाचे कौय, अभिमन प्रम्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पपडो ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयण तणो र, विग्ह पपड़ी निरमार तरतम जोगे रे तरतम वामना र वामित बोध आधार ॥ पंयहो ॥ स्त्रल

रें, चरण कमळ तुज सेवा; नय एम विनवे रे, सु-णज्यो देवाधि देवा ॥साहिब. ॥७॥

श्री सुमतिनाथनुं स्तवन.

(झांझरी आ सुनीवरनी --- ए देशी.)

सुमतीनाथ गुणस्यं मीलीजी, वाघे सुज मन भीतः तेल बिंदु जेम विस्तरेजी, जल्मांही भली रीत. सोभागी जिमशुं, लाग्यो अविहड रंग ॥श। सज्जनशुं जे पीतडीजी छानी ते न रहाय; परिम-ल कस्तुरी तणोजी, महिमा एम-कहेवायं,॥सो.।२। अंगळिए निव मेरु ढंकाए, छाबडीए रिव तेज; अं-ज़ली मांहे जेम गंग न माए, मुज मन तेम प्रभु हेज. ॥सो.॥३॥ हुओ छपन अधर अरुणवर, खातां पान सुरंग; पीवन भरभर प्रभु गुण प्याले, तेम मुज प्रेम अभंग. ॥मो.॥धा ढांकी ह्क्षु परालस्युंजी, न रहे लहि विस्तार; वाचकजश कहे प्रमु गुणेजी, चे रे, विरम पींड उवेख्यो ॥साहिव ॥शा नरम्व दोहिलो रे पामी मोह वश पढीयो, परसी देखीने रे, मुज मन त्यां जइ अहीयो:काम न को सयेरि, पापे पिंह में भरीओ शुद्धबुद्ध नदी रही रे, तेणे नवी आतम तायों ॥ माहिब ॥ ४॥ रूभीनी लालचे रे में बहु दीनता दाखी, तोपण नरी भठी रे मळी नो नव रही राखी, जे मन अभिल-स्वे रे तेह तो तेथी नासे, तृग सम जे गणे रे, तेहने नित्य रहे पासे ॥माहिब ॥५॥ धन्य धन्य तं नग रे ५ इनो मोह विछोडी, विपयने वारीने रे जनने धर्ममा जोडी अभय ते में भएया रे. रापीभोपन कीथा प्रच निव गाठीया रे जे हता म्रारी लीता धमाहित । । एम अनंता मव म भ्यो र भगता साहित मिरियो तुम विण कौण टिय र, बोध रयण मुज बरीयो समय आपज्यो

ं, चरण कमळ तुज सेवा; नय एम विनवे रे, सु-ज्यो देवाधि देवा ॥साहिव. ॥७॥

श्री सुमतिनाथनुं स्तवन.

िझांझरीआ सुनीवरनी --- ए देशी)

्सुमतीनाथ गुणस्युं मीलीजी, वाघे मुज मन भीतः तेल बिंद् जेम विस्तरेजी, जळमांही भली रीत. सोभागी जिमशुं, लाग्यो अविहड रंग ॥शा सज्जनशुं जे पीतडीजी छानी ते न रहाय; परिम-ल कस्तुरी तणोजी, महिमा एम-कहेवायं,॥सो.।२। अंगळिए निव मेरु ढंकाए, छावडीए रवि तेज: अं-जली मांहे जेम गंग न माए, मुज मन तेम प्रभु हेज. ॥सो.॥३॥ हुओ छपन अधर अरुणवर, खातां पान सुरंग; पीवन भरभर प्रभु गुण प्याले, तेम मुज प्रेम अभंग. ॥भी.॥शा ढांकी इक्षु परालस्युंजी, न रहे लहि विस्तार; वान कजश कहे प्रमु गुणेजी तेम मुज प्रेम प्रकार, ॥सो ॥५॥

॥ श्री चदमभुजीनुं स्तवन ॥

॥ रायमी भगमे शिव भांणी -ए देशी ॥

जीनजी चद्रप्रमु अवधारी के, नाय । नवाय जो रे लेल वमणी विख गरीव निवाजनी, वाबा पाठजो र लोल ॥ हरस्वे हु तम सरणे आयो के, मुजने रावजो रे छोल, चौरटा चार चुगल जे भ्र हा के तने दूरे नांखजो रे लोल ॥ १॥ प्रभुजी पंचनणी परसमा के, रुडी यापजो रे लोल, मोहन महर करीने मुजने, दिशन आपजो रे लोलाशा तारक तम पालव में झाल्यों के, हवे मुने तारजोरे लोर कुनरी कुमित यह छे केडे के, तेने हरे वा रजो र टोल ॥ आ सुद्री सुमति सोहागण सारी के प्यारी छे घणु रे लोल, तात जीते विण जीवे, चाद भुवन बेरु आंगणु रे होह ॥५॥ हालुण

लिसमण राणीए जाया के, मुज मन आवजोरे लोल; अनुपम अनुभव अमृत मीठी के, मुलडी लावजोरे लोल. ॥६॥ दीपती दोढंशो धनुष परिमाण के, प्र-भुजीनी देहडी रे लोल; देवनी दस पूरव लिसान के, आयुष वेलडी रे लेल.॥७॥ निगुणी निराणी पण रागी के, मनमांहे रह्या रे लेल; शुमगुरु सु-मतिविजय सुपसाय के, रामे सुख लह्या रे लेल ८ श्री श्रेयांसनाथनं स्तवन.

(दरम न छुटे रे पाणीआ-ए देशी)

तुमें बहु मित्री रे साहेबा, महारे तो मन एका। तुम विण बीजोरे निव गसे, ए मुज मोटी रे टेका। श्री श्रेयांस कीरणा करो ।।ए आंकणी॥ मन राखो तमे सिवतणां, पण किहां एक मळी जाओ; ललचावीं लख लेकिने, साखीं सहज न थाओ ॥श्री०॥ रागभरे जन मन रहो, पण तिहुं काळ वैराग;

वित्त तुमारे समुदनों, कोई न पामेरे त्याग ॥ श्री॰ ॥३॥ एहवा शुं चित्त मेळ्यु, केळ्यु पहेलां न काई, शेवक निपट अयुज छे, निरवहस्यों तुमे शांइ॥श्री॰ ॥४॥ निरोगी सुर केम मिळे, पण मळवानो पकांत, वाचक जश कहे मुज मील्यों, भगती ते कामण तत

श्री वासुपुज्यनु स्तवन

वासुपुत्रय जिन त्रिभुवन स्वामी घन नामी
परनामीरे, निरादार साद्वार सचेतने,करम करम फळ
कामीर ॥वा ॥र॥ निरादार अमेद समाहक, मेद मा
हक मादारों र दरशन ज्ञान दुमेदे चेतन, वस्तु महण चापारा र ॥वा ॥२॥ कर्ना परिणामी परिणामो,
कर्म ज जीव करीए रे, एक अनेक रूप नय वांदे,
नियत नय अनुमारेय रे ॥वा ॥ ३॥ दु स सुसरम
करमफळ जाणो, निश्चय एक आनशे रे, चेतनेता

परिणाम न चुके, चेतन कहे जिनचंदो रे. ।।वा.॥ ॥ ।। परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करमफळ मावी रे; ज्ञान करमफळ चेतन कहीये, छेजो तेह मनावी रे.।।वा.॥५॥ आत्मज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो द्रव्यिलंगी रे; वस्तु तेजे वस्तु प्रकाशे, आनंदघन मित संगी रे.॥ वा.॥ ६॥,

श्री धर्मनाथनं स्तवन.

धर्म जीनेश्वर गाउ रंगशुं, भंग म पहरों हो शित; जीनेश्वर० बीजो मन मंदिर आणुं नहीं, ए अम कुलवट रीत. ।। जीनेश्वर० ।। धर्म. ॥ १ ॥ धरम धरम करतो जग सहु किरे, धरमनो न जाणे हो मर्म; ॥ जीनेश्वर. ॥ धरम जीनेसर चरण गह्या पछी, कोइ न बांधे हो कर्म. ॥ जीने० ॥ धर्म० ॥ २ ॥ प्रवचन अंजन जो सदगुरु कर, देखे परम निधान; ॥ जीने० ॥ हृदय नयन निहाळे जग

चित्त तुमारे समुदनो, कोइ न पामेरे त्याग ॥ श्रो॰

।।३।। एहवा शुं वित्त मेळ्यु, केळ्युं पहेला न कांह,

शेवक निपट अबुज छे, निरबहस्यो तुमे शांद्र।।श्री०

।।।।। निरोगी सुर केम मिळे, पण मळवानो एकान, वाचक जर्ग कहे मुज मील्यो, भगती ते कामण तन श्री वासुपुज्यनु स्तवन वासुपुजय जिन त्रिभुवन स्वामी घन नामी परनामीरे, निशनार मानार सचेतनं,करम करम फ्ल कामीर ।।वा ।।ता निसकार अमेद संग्रहरू, मेद ग्रा इक मा हारो र, दरशन ज्ञान दुमेदे चेतन, वस्तु अ-हण चापारा र भवा ॥ भ। कर्नी परिणामी परिणामो, कर्म ज जीवे करीए रे, एक अनेक रूप नय वादे, नियत नय अनुमिरये र ।।वा ।। ३ ।। दु स सुसरु

क्रमफळ जाणा निश्रय एक आनंदी रे. चेतनेता

(६७) श्री शांतिनाथनुं स्तवन. स्त्रीत नेहा धन घटी तेहा अचिर

धन दीन वेळा धन घडी तेह, अविरानी दन जीनजी भेटस्युंजी; लहीस्युं रे सुख देखी ख्यंद, विरह व्यथानां दुःख सवि मेटस्युंजी. ११। ।एयो रे जेणे तुज गुण छेश, बीजो रे रस ते-ने मन निव गमेजी; चाख्यों रे जेणे अमी ल-लेश, बाकसबुकस तस न रुचे केमेंजी. ॥ २ ॥ जि समिकितरस स्वादनो जाण, पापकुं भगते बहु रीन सेवीयुंजी; सेवाजे करमने जोगे तोहे,वांछे ते सम्कित अमृत धुरे लख्युंजी. ॥ ३॥ ताहरूं यान ते समकितरुप, तेहज ज्ञानने चारित्र तेह छेजी; तेहथी रे जाए सघटां हो पाप, ध्याता रे चेय स्वरुप होये पछेजी. ॥ ४ ॥ देखीरे अदभूत ताहरुं रुप, अचरिजे भविकारुपी पद वरेजी; ताह-री गत तुं जाणे हो देव, समरण अजन ते वाच-कजंश कहेजी: ॥५॥

॥ श्री महिनायनुं स्तवन ॥

॥ तेत्रकय भूपम समोसर्या-ए देखी ॥

मुगशिर शुद्धि एकादशी, दिने जाया रें,

त्रिमुबन भयो रे उद्योत, सेवे सूर आया रे ॥१॥

सुसीया यावर नारकी, शुभ छाया रे, पवन यया अनुकुळ, मुखाला वाया रे ॥२॥ अनुक्रमे जोवन

मजाया रे ।।३।। शहि एकान्धीने दिने व्रत पाया

पामीया, सुणी आया रे, पूरवना पट मित्र, कही स

(६९) शिगराणी ज्यारे पाभीशुं जोखं ।।जइणी १।। जान े छेइ जुनागढे ।।मारा०।। आव्या तोरण आप ।।जइ०।। पशुआं पेखी पाछा वळया ॥मारा०॥ जोतां न दी-थो जवाब ।।जइ०।। शा सुंदर आपण सरिखा ।मारा०।

जोतां नहीं मळे जोड ॥जइ०॥ बोल्या अणबोल्या करो ॥मारा ।। ए वाते तमने खोड ॥ जइ ।।। ३।। हुं रागी तुं वैरागीओ ॥मारावा जगमां जाणे सहु कोय ।।जइ०।। रागी तो लागी रहे ।।मारा० वैरागी रागी न होय।। जइ ०।।४।। वर बीजो हुं नवी वरुं ॥मारा ।। सघळा महेली संवाद ॥जइ ।। मोहनी-याने जइ मळी ॥मारा०॥ मोटा साथे 'स्या वाद ।।जइ।।।।। गढ तो एक गिरनार छे ।।मारा।।नर तो छे एक श्री नेम ॥जइ०॥ रमणी एक राजेमति ।।माराः।। पूरो पाडयो जेणे प्रेम ।।जइः।।६।। वाच-कउदयनी वंदना ॥मारा०॥ मानी छेज्यो महाराज ।। श्री मिलिनाथनुं स्तवन ।।

॥ शेष्ट्रभय मुक्तम समोसर्थी-ए देखी ॥

मृगशिर श्रुदि एकादशी, दिने जाया रे त्रिमुवन मयो रे उद्योत, सेवे सूर आया रे ॥श मुसीया यावर नारकी, द्युभ छापा रे, पवन यया अनुक्रुळ, सुलाला वाया रे ॥२॥ अनुक्रमे जोवन पामीया, सुणी आया रे, पूरवना पट मित्र, कही स मजाया रे ।।२॥ श्रुदि एकादशीने दिने वत पाय रे. तिणे दिने केवळनाण, लहे जिनराया रे ॥अ ज्ञान विमळ महिमा यकी, सुजस सवाया रे, महि जिनेसर प्याने, नवनिधि पाया रे.॥५॥

> ॥ श्री नेमनायनु स्तवन॥। ॥गरवानी देवीयां॥

जहने रहेजो मारा वाहाळाजो रे, श्री गिर-नारने गोख ॥ जइने० ॥ अमे पण तिहां आवीश्च अनुकुळ; ॥भ०॥ षट ऋतु सम काळेफळे ॥अ०॥ बायु नहीं प्रतिकुळ ॥भ०॥५॥ पाणी सुगंध सुर कु-सुमनी ॥अ०॥ दृष्टी होये सुरसाल ॥ भ०॥ पंखी दीये सुप्रदक्षिणा ॥अ०॥ दृक्ष नमे अमराल ॥भ० ॥६॥ जिन उत्तम पद पद्मनी ॥ अ०॥ सेव करे सुर कोडी ॥भ०॥ चार निकायना जघन्यथी ॥अ०॥ वैत्य दृक्ष तेम जोडी ॥भ०॥७॥

॥ श्री नेमनाथनुं स्तवन्।।।

सामळीयो त्यागीने हुं तो रागी, वाला रे मारा संजमशुं रह लागी; सामळीयो त्यागीने हुं तो रागी. ।।टेका।वा.।। मारो नेम नगीनानो रागी ।।वा.।। मा.।। संजम लीए वहमागी ।।सामळीयो ।।२।।वा.।। घड गिरना-रनी घाटे; मोहन मने मळशे हवे ए वाटे; जह है तो हाथ मेलावीश माथे।।सामळीयो ।।३।। वा.।।

।जिइंशा नेम राञ्चल मुक्ते मळवां ।।माराः॥ सार्पा भातम काज ।।जहने॰ ॥७॥

॥ श्री नेमनायनु स्तवन ॥

॥ जायो जमार माहुगा, अयमनाभी-र देसी ॥

निरस्यो नेमि जिणंदने, अखिताजी राजी मति कर्यो त्याग, भगवनाजी बहाचारी सयम प्र द्या ॥अ०॥ अनुऋमे थया विनसम् ॥म०॥शा चा मर चक्र सिद्दासन ॥अ०॥ पाद पीठ संयुक्त ॥भ०॥ छत्र चाले आकाशमां ॥अ०॥ देव दुंद्मी वर उत्त ।[म्॰ । २ ।। महम जोयण घज सोहरी ।[अ०] प्रमु आगळ चालत ॥भ०॥ कनक कमल तव उपरे ।।अंगा विचरे पाय उवत ।।मंगाशा चार मुखे दी ये नेजना ।।अ०। त्रण गढ झाक झमाल ।। म०।। केम रोम अपश्च नावा ॥अ०॥ वाचे नहीं सोह काठ ।।म ।। ।। क्रीन पण उंधा होय ।।अ०। पंच विषय

ातुक्कः ॥भ०॥ षट ऋतु सम काळेपळे ॥अ०॥ मणु नहीं प्रतिकुळ ॥भ०॥५॥ पाणी सुगंध सुर कु-सुमनी ॥अ०॥ वृष्टी होये सुरसाल ॥ भ०॥ पंखी दीये सुप्रदक्षिणा ॥अ०॥ वृक्ष नमे असराल ॥भ०॥६॥ जिन उत्तम पद पद्मनी ॥ अ०॥ सेव करे सुर कोडी ॥भ०॥ चार निकायना जघन्यथी ॥अ०॥ वैत्य वृक्ष तेम जोडी ॥भ०॥७॥

॥ श्री नेमनाथनं स्तवनः॥

सामळीयो त्यागीने हुं तो रागी, वाला रे मारा संजमशुं रह लागी; सामळीयो त्यागीने हुं तो रागी. ।।टेक।।वा.।। मारो नेम नगीनानो रागी ।।वा.।। मा.।। सुंदर श्याम सोभागी ।। वा.।। मा.।। संजम लीए वहमागी ।।सामळीयो ।।२।।वा.।। घड गिरना-रनी घाटे; मोहन मने मळशे हवे ए वाटे; ज़इ हुं तो हाथ मेलावीश माथे।।सामळीयो ।।३।। वा.।। मा।। जह रे हवे राजुल नेमनी पासे, लीए रे हवे

संजम अति उलामे, हारे नेमनाय पहेली रिाव जा

शे ।।मामळीओ ।।थ।। वा ।। मा ।। दंपती शिवसुस

मळीओ ।। वा ।।मा ।। विरद्द दावानल ट्ळीओ ।। वा मा।। अगरो लगो गुण भरीयो ।। सामळीजी ॥५॥वा ॥मा ॥ कहे दीप सुणो एक मोरी ॥ वा ॥ मा ।। तुमे तारी राजुङ नारी ।।वा ॥मा ॥ तुमे ह मने करो मोहवारी ॥सामळीमो ॥६॥ ॥ श्री पार्श्वनायन् स्तवन ॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो माभठीने हु आज्यो तीरे, जनम मरण दुःस वारो जेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुस आपो ॥भ। महुकोना मनवस्नि पुरो, विता सहु-नी चुरो एवु विरुट छे गज तमारु, केम राखोछो दुर्ग गरावन्।।शा शेवक्रने वलवलतो देखी, मनुमू महेर न धरशोः करुणासागर केम कहेवाशो जो उपकार न करशो. ॥शेवक.॥३॥ लटपटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरीसर्न दीजे; धुआडे धीजं नहीं साहिब, पेट पडया पतीज ।।शेवक॥थ। श्री संखे-श्वर मंडण स्वामी, विनतडी अवधारो; कहे जिन हर्ष मया करी मुजने, भवसागरथी तारो ।शेवकापा

श्री पार्श्वनाथनुं स्तवन.

रातां जेवां फुलडांने, सामळ जेवो रंग; आ-ज तारी आंगीनो, कांइ अजब बन्यो छे रंग. प्या-रा पासजी हो लाल, दिनदयाळ मुने नयणे नि-हाल ।। ए आंकणी ।। १।। जोगीवाडे जागतो ने मातो धिंगडमल्लः; सामळो सोहामणोने जीत्या आ-डे मह प्यारा. ॥२॥ तुं छे मारो साहीबोने, हुं छूं तारो दास, आश पूरो दासनी, कांइ सांभळी अर-दास ॥प्यारा॥३॥ देव सथळा दी तेमां, एक तुं

मा।। जह रे हवे राजुल नेमनी पासे, लीए रे हवे संजम अति उलासे, हारे नेमनाय पहेली शिव जा शे ।।मामळीओ ।।थ।। वा ।। मा ।। दंपती शिवसुस मळीओ ।। वा ।।मा ।। विरह दावानल ळीओ ॥

वा मा॥ अगरो लगो गुण मरीयो ॥ सामळीऔ ।। पाना ।। मा ।। कहे दीप सुणो एक मोरी ।। वा ॥ मा ।। तुमे तारी राजुल नारी ।।वा ॥मा ।। तुमे ह मने करो मोहवारी ।।सामळीओ ।।६।।

॥ श्री पार्श्वनायनं स्तवन ॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग

तुमारो माभठीने हु आन्यो तीरे, जनम मरण दुःख वारो नेवक अरज करे के राज, अमने शिवसुख आपो ॥भ। महुकोनां मनविद्यत पूरो, विंता सहु-नी चुगे एवु विरुद्ध छे राज तमारुं, केम रासोछो दर गगवन्।। शवक्ते वलवलतो देखी, मनप्रां महेर न धरशो; करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो. ।।शेवक.।।२।। लटपटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरीसर्न दीजे; धुआडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पडया पतीज ।।शेवक।।थ। श्री संखे-खर मंडण स्वामी, विनतडी अवधारो; कहे जिन धि मया करी मुजने, भवसागरथी तारो।शेवक।५।

श्री पार्श्वनायनुं स्तवन.

गतां जेवां फुलडांने, सामळ जेवो रंगः आ-ज तारी आंगीनो, कांइ अजब बन्यो छे रंगः प्या-रा पासजी हो लाल, दिनदयाळ मुने नयणे नि-हाल ॥ ए आंकणी. ॥१॥ जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगडमल्लः सामळो सोहामणोने जीत्या आ-डे मळ प्यारा. ॥२॥ तुं छे मारो साहीबोने, हुं छुं तारो दास, आश पूरो दासनी, कांइ सांभळी अर-दास ॥प्यारा॥३॥ नेत मधळा दील तेमां, एक अवल, लाखेणुं छे लस्कु ताहरूं, देखी रीझे दील ।।प्यारा ॥था। कोइ नमे पीरने, ने कोइ नमे राम, उदयरत्न कहेरे प्रभु मारे तुमशु काम ॥ प्यारा पामजी हो लाल ॥५॥

> ।। श्री अजरापार्श्वनाथनु स्तवन ।। (गरवानी देखी)

हारे मारे आजनी घटी ते रिख्यामणी जो, अजरापामजी पूज्यानी वधामणी जो ॥मारे आज नीवाशा पूरो पूरो रे तोमाराण शायीं जो, मार मदिरे परारो पाम हाथीओ जो ।।मारे आज ॥ हु तो मोती हाना चोक पूरावती जो, अज गपामजीनी आगीओ रवावती जो ॥ मारे आज ॥भा हं तो चवेलीना यम रोपावतीजो, अजरापा-मजीन प्रगवनीजो ॥ मारे आज ॥ था। कहे रुप-चट म्वामिनो टीटडोजो, मारा इदयकमळलागे मीरहोजो ॥मार आज ॥५॥

॥ श्री पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

पारो लागे मने सारो लागे, दरीशनमां गं-भीरोजी ॥प्यारो लागे.॥ सोना केरी झारीयां ने मांही भंगी पाणी, न्हवण करावुं मेरा जीनजीके अंग।। दिश्शन्।। केशर चंदन मर्यां रे कचोळां, पूजा करुं मेरा प्रभुजी के अंग ॥दिस्शिन०॥ धुप ध्यान घटा अनुहद हे, लळी लळी शीष नमावत हे । दिस्शिन० ।। फुल गुलाबकी आंगी बनी है; हार पहेरावुं मेरा जीनजीके अंग ॥दरिशन०॥ आनंद-घन प्रभु चल पंथमं, ज्योतिमे ज्योत मीलावत है.

॥ श्री पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥ ॥ रघुपति राम हत्त्वमां रहेनो रे—ए देशी ॥

आवो रे आवो पासजी मुज मळीया रे, मार् रेरा मनना मनोरथ फणीआ ॥ आवो रे आवो पार सजी मुज मळीया रे॥ ए आंकणी.॥ तारी मुरत

मोहनगारी रे, सउ संघने लागे छे पारी रे, तमने मोही रह्यां सुर नरनारी ॥आवो रे आवो ॥श। अ-लवेली मुरत प्रभु ताहरी रे, तारा मुखदा उपर जाउ वारी रे, नाग नागणीनी जोढ उगारी ॥ आवो रे मावो ॥२॥ घन्य घन्य देवाघी देवा रे, सुर लोक करे छे सेवा रे, अमने आपोने शिवपुर मेवा ॥ आवो रे आवो ॥३॥ तमे शिवरमणीना रिसिया रे जइ मोक्षपुरीमां वसीया रे, मारा हृदयक्कमळमां व-मिया ॥ आवो रे आवो ॥ आ जे कोइ पार्श्वतणा गुण गार्श रे, तेना भवोमवनां पातिक जाशे रे, तेना समक्ति निरमळ थाशे ।।आवो रे आवो ।५। प्रभु त्रेवीसमा जोनराया रे, माता वामादेवीना जाया रे अमने दर्गन दोनी दयाद्यां।। आवो रे आवो ।।६।। हु नो लखी लखी लागु पाय रे, मारा उग्मा ते इसव न माय रे, एम माणिकविजय गुण गाय ॥आवो रे आवो ॥७॥

॥ श्री महाबीर स्वामीनुं स्तवन.॥

वीरजी सुणो एक विनती मोरी, वात विचा-रो तुमे घणी रे॥ वीर मने तारो महावीरमने ता-रो, भवजळ पार उतारोने रे ॥ परिश्रमण मे अनंता रे कीधा, हज़ए न आब्यो छेडलो रे।।तुमे तो थया प्रभु सिद्ध निरंजन, हमे तो अनंता भव भग्यारे II वीर मने.॥१॥ तुमे हमे वार अनंति भेळा,रमीआ संसारिपणे रे ॥ तेह पीत जो पूरण पाळो, तो ह-मने तुम सम करो रे ।।वीर.।। रे।। तुम सम हमने जोग न जांणो, तो कांइ थोडुं दीजीए रे॥ भवो-भव तुम चरणनी शेवा, पामी हमे घणुं रीजीए रे ॥वीर.॥३॥ इंद्रजाळीओ कहेतो रे आब्यो, गणवर पद तेहने दीओरे॥ अर्जुनमाळी जे नर पापी,ते-हने जिन तमे उद्धर्यी रे ॥वीर.॥थ॥ चंदनबाळाए अंददना बाकुल,पिंडलाम्या तुमने प्रभुरे॥ तेहनी उमे ते गयो रे, गुण तो तमारा प्रभु मुल्यी सुणीने

आवी तुम सनमुख रह्यो रे ॥वीर ॥ ६॥ निरंजन प्रभुनाम धरावो, तो सहूने सरखा गणो रे॥ मेद्

भाव प्रमु दूर करीने, मुजशु रमो एकमेक्शुं रे

।।वीर गुणा मोहा वेला तुमहीज तारण, हवे विल्व

ता कारणे रे ॥ ज्ञानतणा भवना पाप मीद्यवी,

॥ श्री महावीरम्वामीन स्तवन ॥

वारी जाउ बीर तोरा वारणेरे ॥वी ॥८॥

। बीर ॥५॥ चरणे चंदकोशीयो हशीयो. कलप आ

साहूनी साची रे की घी, शिववधु साथे मेळ्बी रे

गिजिले. ते छीलर जल निव पेसे रे ।। जे माल-गी फुले मोहीआ, ते बावल जइ निव बेसे रे ।।गी. रे।। एम अमे तुम गुण गोठ्युं, रंगे राच्या ने की माच्या रे ।। ते केम परसुर आदरे, जे पर-नारी वश राच्या रे ।।गी. ।। ४ ।। तुं गित तुं मित आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे ।। वाचकजश कहे माह्यरे, तुं जीव जीवन आधारो रे ।।गी. ५

।। श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

सिद्धारथना रे नंदन वीनवुं, विनतडी अव-धार ॥ भव मंडपमां रे नाटक नाचीयो, हवे मुज दान देवराय ॥ सि. ॥१॥ त्रण रतन मुज आपो ता-तजी, जेम नावे संतोप ॥ दान देअंतां रे प्रभु को-शल परे, आपो पदवी आप ॥ सि. ॥२॥ चरण अं-गुठे ते मेरु कंपावीया, मोड्यां सुरनाज मान; अष्ट करमना ते झघडा जीतवा, दीधां वरशीदान ॥ सि. ्र (८०) तन नायक शिवसुख दायक, त्रिसला कुर्षे

11३॥ सासन नायक शिवसुख दायक, त्रिसला इसे स्तन ॥ सिद्धारयना रे वंश दीपावीया, प्रमुजी तम ने धन्य धन्य ॥सि ॥॥ वाचकशिखरे किरतीविज्य

राह, प्रणमु तास पसाय ।। घरमतणा ए जिन चोनी समा, विनयविजय गुण गाय ।। सि ॥ ५॥

श्री विरजीन स्तवन ॥

 (फवपण्नी देवी)

जगपति तारक श्री जिनहेव, दासनो दास छुं ताहरो ॥ जगपति ताहरे तो भक्त अनेक, महारे माहरो ॥ शा जगपति ताहरे तो भक्त अनेक, महारे तो एकज हुं धणी॥ जगपति वीरामा हुं महावीर, सुरत तहारी सोहामणी॥ शा जगपति त्रिसलाराणी नो हु तन, गधारवंदर गाजीओ॥ जगपति सि द्धारय कुळ गणगार, राज राजश्वर राजियो॥ शा ज

गपित भक्तोनी मागे छे भी ह, भी इप ड रे प्रभु वा-

रिए ।। जगपति तुंही प्रभु आगम अपार, समज्यो न जाये गुज सारीए ।।था। जगपति उदय नमे कर-जोड, सत्तर नेव्याशी समकीयो ॥ जगपति खंबाय-त जंबुसर संघ भगवंत भावशुं भेटीयो ॥ ५ ॥ ॥ स्तवन ॥

जगत गुरु जिनवर जयकारी, सेवो तुमेभा-वे नरनारी; आशा रे एनी चोराशी वारी ॥जगत॥ ग आंकणी॥शा जळचंदन कुसुमे करीए, धुप दीप अक्षत भरीए; नैवेद फळ आगळ धरीए ।।जगता२। ेथे थे भावपूजा सारी, नाटक गीतने मनोहारी; ती-यां सुधी करो हितकारी ॥ज. ॥ ३ ॥ भावथी दीव्य पूजा करशे, ते भवसायरने तरशे; सरस शीवसंद-रीने वरशे ॥ज.॥४॥ वीस उदेसाथी सार, सुत्र नि शि थशे मनोहार, भणी रुपविजय लहो पार जि.। ५। ॥ स्तवन ॥

आवो आवो जसोदाना कंथ, अम घेर आगो

रे, भगती वच्छल भगवत नाथ शे नावो रे। एम चदन वाळाने वोल्रहे प्रमु आवी रे, मुठी वाक्कळ माटे पाद्य बळी बोलाबी रे ।।आबो,।१। संकेत क-रीने स्वामी गया तमे वनमां रे, यह केवळी केवळी कींघ, घरी जो मनमां रे ॥ एम केसरकेरा कींच करीने पुजु रे, तोए पद्देले वत अतिचार थकी हु भुजु रे ।। आवो ।। श। जीवहिसाना पन्चलाण थु-लयी वरीए रे, दुविहं तिविहंनो पाठ सदा अनुस रीए रे ॥ वाशी बोळो विदल निशिमस हिंसा यद्ध रे, सवा विश्वाकेरी जीवदया नित्य पाळुरं॥आवो ॥३॥ दन चंदरवा दश ठाम वांघी रहीए रे, जीव जाए एहवी वीत को ने न कहीए रे ॥ वघ वधन ने ख्वीच्छेर भार न भरीए रे, भात पाणीनो वी च्छेद पशुने न करीए रे ।।आवो ।।।।। लोकीक देव गुरु मिथ्यात त्यामी मेटे रे, तुम आगळ सुणतां

आज होय वीच्छेदे रे ॥ चोमासे पण बहु काज जयणा पाळ रे, पगले पगले महाराज व्रत अजवा-ळु रे ॥आवो. ॥५॥ एक श्वासमांही सो वार समरुं तमने रे, चंदनबाळा जेवुं सार आपो अमने रे ॥ माळी हरीबळ फळदाय, ए. व्रत पाळी रे. शुभबीर चरण सुपसाय, नित्य दीवाळी रे ॥आवो. ॥ ६॥

॥ स्तवन ॥

(छण गोवाङणी-ए देशी)

हो साहेबजी परमातम पूज्यानुं फळ मुज आ-पो; हो साहेबजी लाखेणी पूजारे सें फळ नापो. ॥ए आंकणी॥ उत्तम उत्तम फळ हुं लावुं, अरिहांने आगळ मुकावुं; आगम विधि पूजा विरचावुं, उभो रहीने भावना भावुं ।हा०।१। जिनवर जिन आगम एक रुपे, सेवंतां न पडो भव कुपे; आराधन फळ ते-हनां कहीए, आ भवमांहि सुखिया थईए।हो०।१। परमव सुरलोके ते जावे, इंद्रादिक अप्सर सुल पान् वे, तिहां पण जिन पूजा विरचावे, उत्तम कुळमां जइ उपजावे ।।हो०।३। तिहां राज्यरिद्ध परिकर रंगे, आगम सुणता सदगुरु संगे, आगमशु राग वळी घरता, जिन आगम जिन पूजा करता ।।हो०।।।।। सिद्धांत लखावीने पूजे, तव कर्म सक्ल दुरे खुजे, लहे केवळ घरण घरम पामी, शुमवीर मळे जो वि श्रामी ।।हो०।।५॥

॥ स्तवन ॥

रे जीव जिनधर्म कीजीए, धर्मना चार प्रकार, दान शियळ तप भावना, जगमां एट्छ सार ॥ रे जीव०११ वरस दिवसने पारणे, कादिश्वर अणगार, इश्चरस वहोरावीया, श्री श्रेयांसकुमार ॥ रे जीव०१२। घपापोळ उघाडवा, चारणीए काहयां नीर, सती सु भद्रा जश थयो, शियळ मेरु गंमिर ॥ रे जीव०॥ ३॥ तप करी काया शोषवी, सरस नीरस अहार, वीर जीनंदे वलाणीओ, धन धन धन्नो अणगार ॥रेजीव ॥था अनित भावना भावतां, धरतो निर्मळध्यान; भरत आरिसा भुवनमां, पाम्या केवळज्ञान ॥रेजीव. ॥४॥ ए जिन वदत सुरतरु समो, जेनां फळ छे सार; समयसुंदर कहे सेवजो, जैनधर्म मुक्ति दा-तार ॥रे जीव०॥७॥

॥ स्तवन ॥

अनीहांरे ध्रप धरो जीन आगळे, रे, कुक्षागर ध्रप दशांग श्रेणी भळी गुणठाणनी रे; अनीहांरे ध्रप धाणुं ते रत्ने जहयुं रे, घडयुं जात्यमइ कनकां-ग श्रिणी श्रुप धरो.॥१॥ अनीहांरे मुनीवर रूप न दाखवेरे, थीती बंध पुखनी रीत ॥श्रेणी.॥ अनीह हांरे बंधोदय गुणठाणे पंचमेरे, हुये खायक शेणी वदीत ।श्रेणी.।ध्रप.।२। अनीहांरे सोळ सामंतने भोळती रे, बन्चे घेरी इण्या लही लाग ॥श्रेणी॰

अनीहारे नाठा आठे सेनापती रे. नव मान बीजे भाग ।श्रेणी ।ध्रुप ॥३॥ अनीहां रे चउमाशा लगे ए रहे मरणे नरनी गरी जाण ।श्रेगी। अनीहारे र जरेला मम कोघ छेरे, कुउधंम समाणे मान ।श्रेगी । भ्रुप ।। आ अनहांरे माया गामुत्र सारखी रे, छे लोभ ते खजण रंग ॥ श्रेगी ॥ अनीहारे मुनीवर मोह ते माचवे रे, रही श्री शुमवीरने सग श्रि । ४। ॥ चकेश्वरीमानानु स्तवन ॥ (मार मार्च र गुरच घरेर--ए देशी) अल्पेकी रे चके बरी मात, जोवाने जहरू, जम मोवनवर्णि गात्र, जोवाने हारे जम इद करे बहु मान जोवाने ।।ए आंकणी।। आ जोवारे ज इंग न पावन थइए देखी मन गहगहोए रे॥ एक तिरम बीजी जगदंता, वंदीने संपद लहीए ।।जा॰

भशा अष्ट भुजाळी अति लटकाळी, मृगपति वाहन-वाळी रे।। जिन गुण गाती छेती ताळी, तिरथनी रखवाळी ।।जा।।।।। श्री सिद्धाचळ गिरिपर राजे, देव देवी सउमाजे रे॥ रंगीत जाळी गोल विराजे, घंट घडीआळां वाजे. जे।।।।।। घाटडी लाल गुलाल सोहावे. पीळां रातां चरणां रे ॥ बहु शोभे छे जग जननी ने, केसर कुमकुम वरणां ॥जो० ॥थ॥ बांहे बाजबंध बेरला बिराजे, कोटे नवसेरो हार रे। केडे कटीमेखळा रणझणके, हीरा झळके सार ।।जे।०।५। नाके मोती उज्वळ वरणां. कंठे नवसेरो हार रे॥ रत्नजिंदत दोय झांझर झळके, घुघरीए झमकार ाजा। । श्री सिद्धाचळ पुंडरगिरिपर, ज्यां जगदं-वानो वास रे॥ जे कोइ ए तिस्थने सेवे, तेनी पु-रशे आश ।जा०।७। देश देशना नाना मोटा, सं-घवी संघ लेइ आवे रे॥ ते सह पहेलां श्रीफळ चं- दही, जग जननीने चढावे ।।जा॰।८। सघवी सघ-तणी रखेवाळी, बहु शोभा छे सारी रे ।। दीपविज य कहे मंगळिक करजा, रासननी रखेवाळी ॥९॥

॥ श्री पजुपणनुं स्तवन ॥ पर्व पजुपण भावीयां रे लाल, कीजे घणु धर्म घ्यानरे । भविकजन आरंभ सकल निवारीयरे लाल, जीवा दीजे कभयदान रे ।भ०।पर्व०।१। सक्छा मा समां माम वही रे लाल, भादवपास समास रे ।म०! तेहमां आउ दीन रुअहा रे लाल, कीजे सक्त उ ह्याम रे ।।मञापर्व । २। खोडण पीसण गारना रेलाल, नावण घोवण जेह रे ॥भ०॥ एवा आरमने यळीए र लाल वजो सुल मजेहरे ।।मणापर्व ।३। पुस्तक वासीने रामीए रे लाल, ओच्छ्य करीए अनेक रे । मंगा घर सारु वित्त वावरो रे लाल, ह्रइंडे आणी विवेक रे॥ म०॥ पर्व ॥ ३॥ पूजी अरवीने

आणीए रे लाल, सदगुरुनी पास रे ।। भ० ॥

ढोल ददामण फेरीया रे लाल, यंगळिकगावो भा-स रे ॥ भ०॥ पर्व. ॥ ५॥ श्रीफळ सरस सोपा-रीयो रे लाल, दीजे स्वामीने हाथ रे॥ भ०॥ लाभ अनंता बताबीया रे लाल, श्रीमुख त्रिभुवन नाथ रे ॥ भ० ॥ पर्वे. ॥ ६ ॥ नव वांचना श्रा सूत्रनी रे लाल, सांभळो शुद्धे भाव रे ॥ भ० ॥ स्वामिवत्सळ कीजीए रे लाल, भवजळ तरवा नाव रे ॥ भ० ॥ पर्व. ॥ ७ ॥ चित्ते चैत्य झहारीए रे लाल, पूजा सत्तर प्रकार रे ॥ भ० ॥ अंगपूजा स-दगुरु तणी रे लाल, कीजीए हरख अपार रे ॥भ० ।। पर्व. ।। ८ ।। जीव अमार पळावीए रे लाल, ते हथी शिवसुल होय रे ॥ भ० ॥ दान संवत्सरी दी-जीए रे लाल, इण समो पर्व न कोइ रे ॥ भ०॥ पर्व. ॥ ९ ॥ काउरसम्म करी सांभळो रे लाल आ-

गम आपणे कान रे ॥ भ०॥ छ्ट अट्टम तपशा करों ने लाल, कीजे उज्बंब ध्यान रे ॥ म० ॥पर्व ।। १० ।। इण विघ आराघशे रे लाल, लेशे मुख नी कोड रे॥ भ०॥ मुक्तिमदिरमां मालशे रे लाल, मुनि इस नमें करजोड़ रे ॥ भ० ॥पर्व ॥ दिवाळीन स्तवन ॥ मारे दिवाठी रे यह आज, प्रभु मुख जो-वाने मार्यी मर्या रे मेवकना काज, भवद् ख खो वाने ॥टेक्॥ महावीरम्वामी मुगते पहेांत्या, गीतम क्वयज्ञान 🖚 धन अमावाम्या दीवाळी मारे, विर मभु निरवाण ॥ जिन । भ चारित्र पाळ्या निरम जान राज्या विषय कपाय रे, पवा मुनिने वंदीए नो उतार भगपार॥ जिन ॥शामकुठ बोर्या वी रजीन तारी चटनवाटा र केवळ ल्इ प्रभु मुगते पहोया पाम्या भवनो पाम। जिन ॥३॥ एवा मु

निने बंदीए जे, पंच ज्ञाने धरता रे; समवसरण देइ देशना रे, प्रभु तार्था नर ने नार ॥ जि. ॥ था। ची-वीसमा जिनेश्वरुने, मुगतितणा दातार रे; करजोडी कवि एम भणे रे,म्हारो दुनिआ फेरो टाळ।जि.। ४।

॥ दीवाळीनुं स्तवन ॥

(बाळाजीनी बाटडी अमे जोतां रे-ए देशी.)

जय जिनवर जग हित्त हारो रे, करे शेवा सुर अवतारी रे; गौतम पसुहा गणधारी, सनेहि वीरजो जयकारी रे 181 अंतरंग रिपुने त्रासे रे, तप कोपा टोपे निवासे रे; लहुं केवळनाण उल्लासे ॥ सने-हि॰ २।। कटीलंके बाद बदाय रे, पण जिन साथे न घटाय रे; तिणे हरिलंछन प्रभु पाय ॥ सनेहि॰ 1३। सवि सुर वहु थेइ थेइकारा रे, जळपंकज नी पेर न्यारा रे; तजी त्रष्णा भोग विकास ।।सनेहिशाशा प्रमु देशना अमृत्रधारा रे, जैन धर्म विषे रथकारा र जेणे तार्या मेघकुमारा ॥ सनेहि॰॥५॥ गौतमने केवळ आली ^र, वर्या श्वातिए शिव वरमाळी ^{रे}, क^{रे} उत्तम लोक दीवाळी ॥सनेहि॰॥६॥ अतरंग **भ**लछ निवारी ^{रे}, शुभ सञ्जनने उपगारी ^{रे}, कहे वीर वि**मु** हिनकारी ॥ सनेहि॰ ॥ ७॥

पाचमनु स्तवन

पचमी तप तमे करो रे पाणी, जेम पामो निर्मा ज्ञान रे पहेलुं ज्ञान ने पछी किया, नहीं कोइ ज्ञान ममान र । पचमी ॥भ। नदीस्त्रमा ज्ञान वावाण्यु ज्ञानना पाच श्रमार र, मित श्चत अवधि ने मन पर्ये मेवल ए उतार रे ॥ एचमी ॥ शा मति अहाबीय यति चउदह वीम अवघि छे असंख्य प्रकार र ताय मत मन पर्यव दाग्यु केवठ एक उतार म ।।पचमी ।।अ। चद मूर्व ग्रह नस्त्र तारा, एक्थी एक अपार र क्वळ्जान समु नहीं कोइ,

लोकालोक प्रकाश रे ॥पंचमी ॥४॥ पारश्वनाथ प्र-साद करीने महारी पूरो उमेद रे, समयसुंदर कहे हुं पण प्रणमुं, ज्ञाननो पांचमो सेदरे ॥पंचमी ॥५॥ आउमनुं स्तवन

हारे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश-जो, दीपे रे त्यां देश मगध सहुमां शिरे रे लोल; हारे मारे नयरी तेमां राजपृही सुविशेषजी, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गंजपरे रे लोल ॥शा हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथजो, विचरंतां तिहां आवी वीर समोसर्यारे लोल; हारे मारे चौद सहस मुनिवरना साथे साथजो, सुधारे तप संयम शियळे अलंकर्या रे लोल ॥२॥ हारे मारे फुल्या रसभर झुल्या अंब कदंवजो, जाणुं रे गुण शीळवन हिस रोमैचिओं रे छोछ; हांरे मारे वाया वाय सु-वाय तिहां अविलंबजो, वासे रे परिमल चिहुं पासे

सिचओ रे छोल।।३।। हारे मारे देव चतुर्विध आवे कोहाकोहजो, त्रिग्ह् रे मणि हेम रत्ननु ते रेचे रे लोल, हारे मारे चौशढ सुरपति सेवे हो दाहो हजो, आगेरे रस लागे इदाणी नचेर लोल।।शाहीरे मारे मणिमय हेम सिंहासन वेठा आपजो,ढाळेरे सुर चा-मर मणि रत्ने जहया रे लोल, हारे मारे सुणतां दुं द्रभिनाद टळे सवि पापजो, वरसे रे सुर फुंछ सरस जान अह्या रे लोल ॥ ५॥ हारे मारे ताजे वेजे गाजे घन जेम छवजो, राजे रे जिनराज ममाजे धर्मनेरे लोल. हारे मारे निरखी हरमी आवे जन मन लुबजो, पोपेरे रम न पहे घोषे ममर्मा रे लोल । हा हारे मारे आगम जाणी जिननो श्रेणि वरायजो, आची रपस्विग्वी द्वयं गय रथ पायंगे र लोल हांरे मारे देह मदिल्णा वदी बेठी रायजी, सु णवा रेजिनवाणी मोटे भारये र छोल । धारेमारे

त्रिभुवन नायक लायक तव मगवंतजो, आणी रे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लोल; हांरे मारे सह-ज विरोध विसारी जगना जंतजो; सुणवा रे जि-नवाणी मनमां गहगहे रे लोल ॥ ८॥ एकादशीनुं स्तवन.

जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसर्याः जगपति वंदवा कृष्ण निरंद, जादव को-डशुं परिवर्या । १। जगपति धीगुण फुल अमुल, भ-क्ति गुणे माळा रची; जगपति पूजी पूजे कृष्ण, क्षा-्यिक समकित शिवरुची ॥२॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंभ परित्रहे; जगपति मुज आतम उद्धार. कारण तुम विण कोण कहे ॥३॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुण तीलो: जगपति कोइ उपाय वंताव, जेम करे शिववध कं-तलो ॥थ। नरपति उज्ज्वल मागशिर मास, आरा-धो एकादशी; नरपति एकसोने पंचास, कल्याणक

तिथि उल्लमी ।५। नरपति दश क्षेत्रे त्रण काळ, चोवीसी त्रीशे मळी, नरपति नेवुं जिननां फल्पा ण, विवरी कर्दू भागळ वरी।।६।। नरपति भर दिक्षा नमि नाण, मल्ली जनम वत केवळी, नरपति वर्चे-मान चोवीशी मांहे, क्रत्याणक आवली ॥७॥ न रपित मीनपणे उपवास, दोदशो जपमाळा गणी, नरपित मन वच काया पवित्र, चरित्र सुणो सुवत नणो ॥८॥ नरपनि दाहिण घातकी खंड, पश्चिमदिशि इक्षकारपी नरपति विजयपाटण अमिघान, साची न्य प्रजापाठथी ॥१॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चद्रमुखी गजगामिनी नरपति श्रेष्ठी शर विख्यात, शीयल मलीला कामिनी ॥१०॥ नरपति पुत्रादिक पग्वार मार भूपण चीवर धरी, नरपति जाये नि त्य जिन गेइ नमन म्तवन पूजा करे ॥११॥ नर पित पोप पात्र'सुपात्र, सामापिक पोपंचवरे,नरपित देववदन आवश्यक, काळ वेळाए अनुसरे ॥१२॥

काया अने जीवनो संवाद. ' खगाच काफी.

चेते तो चेताबुं तने रे, पामर पाणी-ए देशी.

काया जीवने कहे छे रे ओ प्राणपती,लाड तो लडाव्यां सारां, कदी न कयी दुंकारा; आज तो रीसाणा प्यारा रे. ओ प्राण ।। शा भेळा बेशीने ज-माडी, बाग बगीचाने वाडी: फेरवी बेसाडी गाडी ्रे. ओ प्राण० ॥२॥ अत्तर फ़ुलेल चोळी, केसर क्संबा घोळी; रम्या रंग रस रोळी रे. ओ प्राण० ।।३।। शणगार तो सजावी, आभ्रषणोने पहेरावी मोज मनने करावी रे. ओ प्राण० !!श। रोज तो हमीने रहेता, पाणी साटे दुध देता; आज मान धारी बेठा रे. ओ प्राण गाप्ती सुजननी एवी रीती े जेनी साथे करे पीती. वगडे न मूके रोती रे. ओ प्राण्।।।। करं छुं हुं कालावाला, मुजने न मुंको वहाला; साथे राखोने छोगाळारे. ओ प्राण ।।।।।

जीव अने कायानो सवाद चेते वो चेताव वने रे मामर माणी-ए देशी जीव कायाने सुणावे रे. आ काया भी-ळी नाया तु नामणगारी, पासमां पहयो हुं तारी, प्रभुन मुकया विमारी रे भो नाया ॥१॥ तारी साथे प्रीति करी, जरी न वेठो हु टरी, पापनी में पोट मरी रे जो काया॥शा घणी वार समजावी हरीली न मान आवी, मुजने दीओ इवावी रे-ओ दाया॥॥ नीतिनो प्रवाह तोहयो, अनीति ना प्रा जोडयो. भज्जननो संग छोहयो रे औ काया।।।।। मदगुणन निवार्या, दुर्गुणने वघार्या, क्थन न कान धाया रे ओ काया ॥५॥ आतमा हूँ चिट्यन्टी काया तु दीसे छेगदी, तारी संगे खाँ मर्ने र ओ काया ॥ ॥ मोबर्त भ्रसर् भावे, लस-ण- 🕠 📭 उम्तुरी सुगध जावे रे सो नाया । ।।वर न्यों ने नारी मंगे, रम्यो पररामा रंगे, कुडां

ऋत्य कीधां अंगे रे, ओ काया।। । [पारकी था-्पण राखी, आळ ओर शीर नांखी; जुठी में तो पुरी साली रे. ओ काया. ॥९॥ प्राण पांजरामां प्यारी, रह्यों छुं करार धारी; काया नावे कोइ व्हारी रे. ओ काया.॥१०॥ मारो छेडो छोडो काया, कारमी ल-गाडो माया: ताराथी भोळा ठगाया रे. ओ काया. ।।१९।। कायानी मायाने छोडी, शुकराज गया उडी, भाण पिंजराने त्रोडीरे. ओ काया, ॥१२॥ अनिति-ना काम तजो, निंदा तजी प्रभु भजो; सांकळानी शीख सजो रे. ओ काया. ॥१३॥

॥ स्तवन ॥

पीछ धनाश्री-ताननो भरतो नथी रे-ए देशी तननो भरुपो नथी रे, चेतन तारा तननो भरुपो नथी रे; चंचळ जळ कछोळ आवरदा, फो-गृट रह्या मधी रे. ॥चेतन०॥ जन्म्यो जे नर जग-तमां, ते निश्चय मरनार; आशा उम्मर जेवडी. त- ष्णानो नहीं पार ॥ तननो०॥ छत्रपति लखपति गया, गया नृपित के लाख, जरा फुके जन फाटता वाठी कीघा राख ।।तननो ।। खर्मा खमा परिजन करे रावण सम अभिमान, नामदार नर वही गया, नम उर्या नमशान ॥तननो०॥ परिगृहना आरंभ-यी, क्यों कुकर्म अपार, पापे पैमा, मेळवी, थयो अप्ट माहुकार ॥नननोश। लोक मणे लखपति घ यो पण शु पाम्यो नेल तुज साये शु भावशे, त पाग नागे मेळ ॥ननमो ।। निज हाये जे वावरे, न पोतानु याय पढ़ी बधारों जे बघे, मालीक सोर गणाय ॥तननीन। मन्युहे। माखी रचे, दान न टीधु पान लग्नामे लुग गयो, घरो पग सोया प्राण ।। उनना ।। इनी वन्दन छे हायमां, कर शुम सकत काम परमार्थ भीते करी, करी अमर निज नाम ।।ननना ।। भर नान्कना भवनमा, भजन्या विभिन्न वप गय रक लग पशु बन्यो, उह्यो न तत

प्रवेश. ।तननो०। आतम अपी निर्मळो, प्रभु चरणे चित्त लाय; ताप मरे जीन जापथी, सकळ महोदय थाय. ।।तननो०।। ।। स्तवन ॥

झीझोटी-भोजा भगतना चावखानी देशी.

स्रखो गाडी देखी मलकावे, उमर तारी रे-लतणी परे जावे, संसार रुपी गाडी बनावी, राग् देप दो पाटा; देह डवाने पल पल पैहां, तेम फरे आत्रवाना आंटा रे. ॥ युरवो ।। श। करम अंजीनमां कषाय अग्नि, विष वायु मांहे भरीयुं; त्रष्णानुं भुं-गळुं आगळ करीयुं, त्यारे गति मांहे फरीयुं रे. ॥मुरुलो ।।।।। प्रेम रुपी आंकडा वळगाडया डबे डबा जोडया भाइ; पूरव भवनी खरची लइने, चेतन बेसारु बेटा मांही रे. ।। मुखान।। साइए टीकीट ं लीधी नक तीयेचनी, कोइए लीधी मनुष्य देव; कोइए टीकीट लीधी सिद्ध गतिनी, पाम्या अमृत मेवा रे. ॥मुखो०॥।। घडी घडी घडीयाळो वागे. पाप भरी पाकीद लइ जातां, काळ कोटवाळ त्यां आ वेरे ॥मुनादा काळी नरकमां जमराय पासे, ज इने शाप्यो तत्काळे आरंभ करीने आव्यो परोणो तेने, कुभीरे पाक्रमां घाळोरे ।।मुः।। शा लाख चो राशी जीवा योनीमा जीव है। ते फरी फरी आवे, मत्गुरु गोल ज धर्म आरोधे तो पामे मुक्ति दुवा रे ॥मु ॥८॥ मने जदार्मे अमीना वर्षे, आतम ध्यान लगाइ गोपाठ गुरुना पुण्य पमाययी मोह ने आगगादी गाइ रे ।। मुनारा। ॥ चेनपणीरुप चायवो ॥ ॥ साम भैरवी॥ मृत्यो शु भाय पथारी, पहतु छे पाय पयारी ॥ण टेक् । भारे भुवन चणाया उंचां, अगणित गोय अगरी पारानो तरी शोमां छारमां, खन्छ सु

गंधी वारीरे ।।भूल्यो०।। गादी तक्ीआ छत्र पलंगे, सूइ रह्या शणगारी; पवनतणा चाछे छे पंखा, पाय तलांसे पारी रे. ॥भू०॥ चंदन पुष्प अरगजा अ-त्तर, शीतळ जळनी झारी; खाशां खानपाननी खांते, रोज करे तैयारीरे ॥भूल्यो०॥ भोगविलास विषे सुल सीमा, धन यावनथी धारी; बून वगीमां प्रम-दा साथे, खाय हवा परवारीरे.।।भूल्यो ।। बाग ब-गीचामां वहु रीझयो, नचवी नकटी नारी; दया धर्म के दान न दीघां, पुंजी गइ परवारीरे. ॥ भूल्यो०॥ पुत्र कलत्र भित्रममताए, मारी मोह कटारी; दुःखद काम कोध लोभने, तुं सम्ज्यो सुखकारीरे ।।। सून।। ग्रंट क्यों अहीं आं रहीं जाशे, साथ न आवे तारी; अंते ते सर्वे मुगज़ल छे, खोटी मेल खुमारी रे. शभूल्यो ।। शम दम साधन साध्य विवेके, कर सं-गति अति सारी; अरिहंत गुण अंतर संघरी छे, व-शमी वाट विचारीरे. ॥भूल्यो।। वीनो पा. सपाप्त.

(\$08)

भाग ३ जो ॥नाटकना रागनां गायनो ॥ ॥ गायन १ छ ॥

मुन्ध मन उम्म मतीशे छाई छे-ए राग मवीक जन उमग अतीशय लानीने, श्री जीनमदीर अदर फरता फरररररर फरररररर रुम-क झमक रमना रमीला, लुमक लुमक छुमता छनी-ला सननननननन शोर मचावे, श्री चितामणी पार्श्व रीझावे, भवदु ख दळदर दुर हुजवे, गावे व जारे तान मान, धीरकट ताना तननन धीरकट तीरवेट धाधाधा ॥भवीः।।

गायन २ जु प्यूगी कीरती समीनी—ए सम

आवो आज सगमां रुमंग रंग भरी, गुणगा वा जीनजीना (२) स्तवन रुचरी ॥सावो०॥ विविध पाप पितिष नाप मतत दूर करे, न्यायि न्यायि सु खदाइ इश ए खरे; भाग्यशाळी भावी 'नान' पापने हरे, जैनबाळ मंडळी आ वंदती फरी ॥अत्वो०॥ रीखवदेवनुं गायन ३ जुं.

अमन चमन नमन नमन नमन साथ नोकरी-ए राग वंदन वंदन वंदन, वंदन करं आपने. रीखव दादा दील धारी, वंदन करं आपने. ॥रीख.॥ हरनीशे हुं गुण गाउ, चरण कमळ चित्त लावुं: मोह मद माया तजी, टळवा कुतापने ।।शिखम०।। छुमक छुमक छुमक नाचुं, झुमक छुमक झांझ संग तननन सतार तार: द्वमक मारी थापने. ।।रीखभ०।। दादा रे'म राखी आप, कापो ताप पाप अमाप; ने-हथीं नमे छे 'नान' जपी'नित्य जापने.।।रीखभ०।

सुपार्श्वनेथिनुं गायन ४ शुं. बरवो-यथा छोरे पती—ए देशी.

थयो छे रे अम आगळ दीवस जीन दरशन-थी-आजे, प्रभुना दरशनथी आजे; सप्तम देव सु पार्श्वजी तारी, मुरती मोहनवेल, जयवता, अरिहं-ता. मगवता, निरखंता, अति आनद् उलसित तन मन धन घडी, धन पळ आछाजे ॥ ययो०॥ नाय नीरंजन खजन अंजन भव दुःख भंजन रूप, श्री शान्ति, मुखरान्ति, गुण खान्ती, टळे मान्ती, आ तम गुण नीरमळ जळकंत भवी, भव अमणा भाजे ।।थयो०।। पंचम काळे पामर प्राणी, जीनवाणीयी विमुल, सुग गाने, ध्याने प्याने, मनमाने, ताताने मंडळ महावीर कहे लहे सप करी, कर्म घर्म राजे विमळनायनु गायन ५ मु पीलु-यनावती म ता नीर मर्यारे थारो मेनमे-ए देशी विषठ जिन सेवे विषठ गति मति यायरे, विषय जिन जोता दुरगति दुर पळाय रे ।।विषळ ।। मेवो सेवो माभा कहे छे, सेवा सेद वलाणे, द्रव्य भावयी सेवं तेने जन्म मरण मिट जायरे ॥वि०॥

मनदृर मुरत सुरपति नरपति हरावे दरीशण पामी.

द्रव्य भाव दिशिन अनुभवमयः त्रिजे भव सिद्ध ताय रे. ॥ विमळ०॥ मन वच काया स्थिर करी ध्यावे, ज्ञान किया मन भावे; मंगळमय टेकिरसिंह निश्चे शिवरमणी पद पाय रे ॥ विमळ०॥

शान्तीनाथनुं गायन ६ ठुं. वीरा वेक्याना यारी. उभा अटारी-ए राग श्री शांती तुमारी, छे वलीहारी, जग विषे जि-नराज. पुरो आशा अमारी दइ सुखवारी, छे बली-हारी। जग.। कुसुम वासित आसन सुंदर, धुप धुपा-दिनी धुम; उडी रही अलबेला खामी, नाचुं छनक छुम; भाव अंतर धारी, ज्ञान सुवारो, छे वलीहारी. जिंग.। रोग शोक वियोग विदारी, देजो दरशन दा-नः गाजता गुहीर खदंग साथे, नित्य लगावं तानः प्रभु भक्तिनथारी, जय जयकारी, छे बळीहारी. ।जगा

मुगट मंडळ काने कुंडळ, झमके झाक झमाळ; शान्ती

ःसंघमां शान्तीफेलावी, करजो नंगळमाळ: मागे 'नान'

विचारी, विनय घारी, छे बिलहारी ॥ जग ॥ अरनायन गायन ७ मुं पीछ-- मोपनना रंगमां श्रवे-- ए देशी भा भरजी अर जीनवरजी ।टेक। अम तारो गरीव नीवाज बीरुद तुमराज सहायता करजी ।आ अरजी । चार गतिमां लाख चोर्यामी, योनी दु खनी खाण, काठ अनादी भव अटवीमां, भ्रमण क्यु भग-वान महायता करजी । आ अरजी । काम कोघ मद मोह मानथी छोडावो जगनाथ, पामर प्राणी करु प्रा-र्थना ग्रहो सेवकनो हाथ महायता करनी ॥ आ अरजी । अन्त बठी पण अबळ य्यो छु, कर्म विषे कीरतार महागीर महत्र महत्र मागे, प्रमु पद तुज आधार महायना करजी ॥ आ अरजी ॥

मलीना नु गायन ६ मुं सासारी ताल वादरी पुरण भारये मळ्या डो मलीनाय देवा, कर हू नीत्य शेवा, आपो मने मोक्ष मेवा, आपो मने मोक्ष मेवा, आपो मने मोक्ष मेवा. जय. जय, जय, जय.! जुवो तब्न बेठा छो जाणे जोत जेवा, मागुं हुं श-रणे रहेवा, करमना दंड देवा, करमना दंड देवा, करमना दंड देवा. ॥जय, जय, जय,॥ आवो गावो बजावो बंधु नृत्य करी, तारी ल्यो प्रेमे करी दहाडो नहीं आवे फरी, दहाडो नहीं आवे फरी, दहाडो नहीं आवे फरी.॥ जय.॥

मल्जीनाथर्नु गायन ९ मुं, निर्वेळ शत्रु शवळ राज्यपर—ए राग.

मही जीणंदा, छो खुलकंदा, कष्ठ अमारां का-धोने; महेर करी महाराज अमोने स्हाय तमारी आपोने. छोजी अती दयावान, प्रभु भारी ऋपावा-न, (३) नथी नथी नथी कोइ आपनी समान. ह-रनीशे होंश धारी, धरु तम ध्यान-छोजी, ॥मछी॥ हुंतो केसर चंदने करुं पुजा धरी प्रीत, (२) असार संसारमांथी काढी नांखी चित्त, नानो नेह घरी नी-त्य, गाय आप गीत हुंतो ॥मल्ली०॥

्नेमनाष्र्चुं गायन १० मु,्

परवो-ए माये महकी छइ आर्व-ए देशी

प नेम गर्य गिरनार, प्यारा प्रीतम प्यारी करे रे पोकार ॥ए०॥ आठ मवनी प्रीत त-मारी, एक पलमां ते नीवारी, छोड गर्य गीरनार ॥ए०॥ शक्ति तेज पति संगे, नेम राजुल राग रगे; मंगठ मुक्ति मोझार ॥ए०॥

पार्श्वनायनुं गायन ११ मुं

महाद-मने सहाय करको मोरारीरे-प देती.

प्रमु पारम परम उपकारीरे, तमे सेवो सक ल नर नारी, क्लता हतारी दया दिल घारी, नाग नागणी भयथी लगारी ॥प्रमुः ।। नवकार मत्र पवि त्र कर्या, सुर लोक भला सुक्कारी, शांतमुद्रा मो-हनगारी, सरतपर जाल वारी ॥प्रमुः ।। महावीर स्वामीनुं गायन १२ मुं. बरवो-जपती भीतमनी जपमाळ-ए देशी.

मनहर महावीर गुण मणी माळ, मुर्त्ति मोह-नवेली. ॥टेक.॥ वरीआ शीवरमणी व्हेली आहा अलबेली, पाम्या परमात्म पदवी अम पहेली।मन।. संसारी सुख अनुभव्यां, नाथ अमारी साथ; करी उतावळ एकलां, केम तर्या भवपार. अमने मनमो-हन मेली खेल तुं खेली, पाम्या परमात्म पदवी छ म पहेली. ॥मनहरू०॥ अंतर निरंतर सदा, जाप जपुं जीनराज; चरण कमळनी चाकरी, अनुचरमा-गे आज, करीये कृपाछ दृष्टि प्रेम भरेली, पाम्या परमात्म पदवी अम पहेली, ॥मनहरना दर्शन थ-तां भव दव विषे. उंगारो अरिहंत; करजोडी विन-ति करं, आपो सुल अनंतः शिवसुत केशवना वे-ली पापने ठेली, पाम्या परमातम पदवी अंग पहेली.

(4,5)

।। गरवी ।। कोवखडी दल मीठडी-ए शग -

नेम नगीना नायजी, नव तरसावो नार, व्हाला व्हेला आवीने, इस्त प्रहो घरी पार जोती वात तम माटे धनी, बहु बाबरी रे छोल, समुद्र विजय तणा पुत्र छो, मातु मीवा देवी लोल, जा दवकुळ मली भार, तम माटे बनी बहु० अरजे सुणी अक्टा तणी, जबरी लाज्या जान, कर्या पी-कार पशुप मली, सुण्यो अभुजीए कान छोड़ी मने छेल छबीला, क्यां चाल्यां छोडाबु पशुहारे लोल, पीतम पाळ पवारो घेरे, पहावो न भांसुहां रे लोल भाउ भवनी प्रीतहो, पलमां दुटी न जास, नवमे भव छोड़ नहीं, लळी लळी छाएं पाय रहे त नयी दील शान्तज मारु, स्वामी बीना गमरावे, ररीरान प्याग इन्छे छे दारा. मळवा आप संग

आवे; सुणो नेम सुणो मारा चीत्तडाने चोरी, मने त्रयां विसारी, सुज यन वसीयाजी, संजमना रही-याजी. दंपित तो शीव वरीआ, रामचंद रंगे मळो-या; जोती वाट तम माटे, बनी बहु बाबरी रे लोल.

॥ गरबो ॥

॥ गाजे गगन गररर-ए राग ॥

परके धजा जो फररर धजा जो फररर, जीन मंदीरपर फररर. वागे घंट जो घननन घंट जो घ-ननन, जीन मंदीरमां धननन. भावे भावी जाय सररर, बहु खुंशी थाय खररर. ॥फरके॥ नीस्सहां नस्सही उचरतां, प्रथम गभारे जाय; जोइ छत्री जीनराजनी, एनां पातिक दुर पळाय रे. ॥जीवडा॥ सत्य कथन आ कहीए, केम रहीएरे मुर्खाइमां रे; जीवडा सत्य कथन आ कहीए, भन भ्रमणामां भ-टकतां: तारो ना व्यो पार, तेथी चेती चीत्तमां. च-

टपट चालो रे "न्हाना"ना नायने नीहालकाने ---

ताळ्ना भ्रमे, जैन बाळ्को रमे, जोतां स्वामी सं-भव जीन, स्वामी संभव जीन, पामी ल्ड्रण सुख सररर, सुख सररर सुख सररर । फरके ।।

॥ गस्बो ॥

पाणी भरवा हु गर्धी रे,-प राग

आयो उत्तम दहादे। रे, पजुसणनो व्हालीः वाचे माघु वनाणो रे, घरमाघारे चाली आन्यो ॥ भव तरवा मर्वे सुणे, जोने राखी ध्यान [?] शा स्र वचन श्रद्धा घरे, नकी शाय कल्याण एवं मा-खी गया छे रे, वीर जीन जयकारी. [२] वेम तारी गया छे ने, घणां नम्ने नारी ॥ आध्यो ॥ छङ अहम क्रना यकां, रृत्तिओ वश थांप (२) तो तेने नहशे नहीं, पाप सदको स्याय ॥ सुसे नाव समारी र उंग भवजळ तारी (१) 'नान' वाणी आ मारी रे मदा छे सुखनारी ॥आन्यो॥

॥ गरबो ॥

पुनम चांदनी शी खीछी-ए राइ.

रसीक रास आज रचशुं आणंद अहीं रे, हेते हळी मळी सकळ समाज, महावीर मंदीरे मजेथी ताळी आपतां रे.॥टेक.॥ भला भव तरवा मन उ मंग छे रे. माटे सजी आज सुंदरी शण्गार ॥ महावीर॥ भक्ति माळा भावथी; धारे नर ने नार: ्र सुख शान्ती पामे सदा, वरते जय जयकार अती उमंगे प्रभुना गुण गावतां रे, सदा सुखी सुखी सु-सीआ थनार ॥ महावीर. ॥ पुन्य प्रतापे पामशोः मक्तिमाळा यारः जंजाळी आ जग महीं, 'नान' नथी कांइ सार. तेथी चेती छे चतुर चीत पाणी-आ रे निश्चे नवरंग अंग मळ्नार ।। महावीर.।। · कंचन काया कामनी कंइ नहीं आवे काम; मुकी मनडा चालवुं वरी न रहेवुं वाम. त्यारे मारुं तारुं करीने द्यां स्थापवं रे, साथे साचं एक "अग्रिहंत"

नाम ॥महावीर॥ मन मरकट ने मानवी, मद म-दीरा पाय, कहो गती क्या तेहनी, उत्तम अरेरे थाय जोता दया छुटे मज्जन दातारने रे, तेथी जप मन 'जीनराज" नाम ॥महावीर॥ ॥ गरवो॥

रासहो-पेछ परवा वास, हीच पठी दीपपंदी चालो चालो चतुर नर आज, जीन मुखजो

वाने, नमुं तारण तरण झहाज, भव दु स खोवाने, जपी जाप्र सदा जीनराज अघमल घोवाने, ए कि गिए नीरमळ काज, शीववधु मोहवाने विधि सिंद्द त स्वामी सेवीए सदा मागीए छे मंगळ महाराज रे, अमने ममार सिंधु तान तारीए, आशरो अमोने प्रमु एक आपने, करीए सर्वज्ञ सुपसाय रे॥ अमने ममार ।। मृगमद केंसर चंदन चोळी,

अगरवर प्रतमारने घोळी, पुजे महाबीरजीन टोळी, तन मन वचन सुघारी जासुल फुल अमुल्य चहा- वे, शीवसुत, केशव शीप नमावे; सुखकर सेवा ब-जावे, तन मन वचन सुधारी. ॥चालो॥

॥ पद १ ॥

बेहेर बेहेर नहीं आवे, हो अवसर बेहेर बेहर नहीं आवे।।टेका। ज्युं जाणे खुं करणे मलाइ, जनम जनम सुख पावे।।अवसर०।१। तन धन जो-बन सबही जुठा, प्राण पलकमें जावे।।अवसर०।१। तन छुटे धन कोण कामको कायकु कृपण कहावे।।अवसर०।३। जाके दिलमें साच बसतहे त्याकु जुठ न मावे।।अवसर।४। आनंदधन प्रभु चलत पंथमें समरी समरी गुण गावे।।अवसर०।५।

॥ पद २ ॥

बिलहारी जाउं वारी, महावीर तोरी समवस-रणकी ।।बिलहारी०।। आंकणी।। त्रण गर उपर तखत विराजे, बेठो छे पुरुषदा वारी ।।महावीर०।१। वाणी जोजन सहु कोइ सांमळे, तार्या छे नर ने नारी॥ महा।।।। आनद्यन प्रमु एणीपेरे बोले, आवा ते गमननी चारी ॥महावाशा

।। पद ३-॥

हारे प्रमु भज छे मेरा दिल राजी ॥आक-णी।। आउ पोहोरकी चोसउ घडीयां, दो घडीया जिन साजी रे ॥हारे॥ शा दान पुन्य क्छू कर्म कर छे, मोह मायाकुत्यागी रे ॥हारे०॥शा आनंदघ कहे ममज समज ले, आखर लोवेगा वाजीरे ।२। ॥ पद ४ ॥

क्रमक्रमने पग्छे, पघारो राज, कुमकुमने प-गळे।। आंकणी ।। समार छोडी सजम आदरवाः दान दोघा दगले ॥पत्रारो ।।।।। सेवीका देवी शे-हेम पुरुपर्से, प्रमु बेसी फरो स्वळे ।।पघारो ।। १।। वन जह प्रमु दीसा छीनी, उपजे ज्ञान चौथुं हगले ।।पघारो० ॥३॥ करम खपावी केवळ लीघं, मोसे

पहोता तेतो एक मज^{छे} ॥पधारो०॥४॥ नथु कल्या-ण कहे चेतनने, तुं तो एवा प्रभु भजले ॥प० ।५।

॥ पद ५॥

समेतिशिखर चालो जइए मोरी सजनी ॥स-मेति।।टेका। देश देशके जात्राए आवे, अतिसुख अतिसुख चहीए मोरी सजनी ॥समेति।।शा वीशे टुंके वीस जिनेश्वर, वंदीने पावन थइए मारी स-जनी ॥समेति।।शा मेन वच काया प्रदक्षणा दे कर मुक्ति पदम पद लहीए मोरी सजनी ॥॥।

॥ पद ६॥

पंथीडा पंथ चलेगो, प्रभु भजले दीन चार॥
पंथीडा०॥ क्या ले आया, क्या ले जासे, पाप पुन्य
दोनुं लार ॥पंथीडा०॥ वालपणुं तें तो खेल गुमायो, योवन माया जाल ॥पंथीडा०॥ बुढापो आयो
धर्म न पायो. पीले करत पोकार ॥पंजीना —

माया जुठी काया, जुठो सब परिवार ॥पयी०॥ दय मया कर पास आवंता, अवतो तेरो आधार ।एं०।। पद ७

अमे तो आज तमारा, वे दीनना मेमान, सक्य करो सा सङ्ज समागम, सुल्नु एज निदा न ॥ अमे ।। श। आव्या जेम जशु ते रीत, सर्व एम ममान, पाछा कोइ दिने नहि मछीए. स्यां क रंगो सन्मान ॥अमेशाशा साचवजो संवध परस्पर धर्मे राखी ध्यान, संपी सदगुण लेजो देजो, दूर क्री अभिमान ॥अमे०॥ । लेश नयी अमने अ तरमा मान अने अपमान, होय कशी कहवाश अमारी तो त्रिये परजो पान ॥अमे०॥॥

निध्य स्वरुपी सदा पद वेशे तु मुख का मुले र ॥टेक ॥ व्याज नको पत्ले नहीं वाप्योत सामी लगाइ मुले रे ॥मिद्ध०।१॥ नरकं निगोद

कुमतका शिरपर, आप वन्यों हे दुले रे ॥ सिद्ध० ॥२॥ सब संपतका सुल देखकरः चेतन मनमें फुले रे सिद्ध ॥३॥ जिनदास तें दुनिया मांही, जन्म लीयो सब धुले रे सिद्ध०॥४॥

पद ९.

भुजंगी.

करो मोजडी आ त्वचानी रुपाळी, प्रभो ! स्नायुने वापरो दोरी जाणी; वळी ओष्टपर आप स्वच्छंद चालो. अने विरह्थी दु खीने सुख आपो; प्रभु आपना चणनो दास हुं छुं. स्वीकारो विभु दासनो दास हुं छुं.

आ माळामांना दोरानी माफक में मारुं मा-शुं अनेक मणकाओ (संकट) मांथी कहाड्युं छे त्यारेज हुं म्हने-आत्माने ओळखी शक्यो अने त्यांज शांत थइ बेठो छुं, (१२२)

साखी माळा तो मनकी मली, ओर काष्ट्रका भार, माळा बीचारी क्या करे फेखनार गमार

माळा बीचारी क्या करे, फेरवनार गमार थोयो

मखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनी छाई। लीजीए, मनवंछित पूरण सुरतर, जय माता स्त अलवेसरु ॥१॥ दोय राना जिनवर अति भला, दो य घोठा जिनवर गुण नीला, दोय छीला दोय माम् इस्या सोळ जिन कचनवर्ण लह्या ॥२॥आ गम ने जिनवरे मालिओ, गणवर ते इइडे रासी ए तेहनो रम जेणे चालीओ, ते हुवो शिवसु व मान्वीओ ॥३॥ धरणोधर राय पद्मावती, प्रमु पार्श्वनणा गुण गावनी सहु सघनां सकट चुरती, नय विमञना बछिन पूरती ॥३॥ चिंतामण जिता चूरसे आदेसर आशा पूरशे, गांतीनाथनी शेवा जं करे.जे जोइए वे आवीं मळे ९

वीजनी थोय.

दिन सकळ मनोहर, बीज दिवस सुविशेष; राय राणा प्रणमे, चंद्रनणी जिहां रेख. तिहां चंद्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह; हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह.

॥ पांचमनी थोय ॥

श्रावण सुदी दिन पंचमीए, जनम्या नेम जिणंदते; स्यामवरण तणु शोभतुए, सुख शारदको चंदतो.सहस वरस प्रभु आवखुए,ब्रह्मचारी भगवंततो अष्ट कर्म हेले हणीए, पोहोच्या सुगति महंततो.

॥ आउमनी थोय.॥

मंगळ आठ करी जस आगळ, माव धरी सुर-राजजी; आठ जातिना कळस भरीने, नवरावे जि-नराजजी. विर जिनेश्वर जन्म महोच्छव, करतां शिवसुल सांघेजी; आठमनो तप करतां अमवेर, मंगळ कमळा वार्षेजी ॥ एकादशीनी थोय ॥

एकादशी अति रुअही, गोविद पूळे नेमः कीण कारण ए परव मोटु, कहोने मुजद्युं तेम जि नवर कल्याण अति घणा, एकसोने पंचास, तेणे कारण ६ पर्व मोटुं, करो मान उपवास

॥ सिद्धाचळनी योयो ॥

श्री शेहुंजो तिस्य सारों, गिरिवरमां जेम मे-र उद्धारों, अकीर रामा पाम, मत्रमाही नवकारज जाणु, तारामां जेम चंद्र बखाणुं, जळघर जठमां जाणु पंखीमा उत्तम जेम हश, कुळ्मांही जेम रि खबनो वंग, नामितणों ए अश, खेमावंतमां श्री अस्हित, तपसुरामां महा मुनिवत, शेर्ह्यजे गया गुणवंत ॥ १॥

पुंहरगिरि महिमा, आगममां परसिद्ध, विम-व्यचळ मेटी, ल्हीए अविचळ रिद्ध, पंत्रम गति ।। श्री सीमंदिर स्वामीनी थोयो, ।। श्री सीमंधर जिनवर, सुलकर साहेब देव;अ-रिहंत सकळनी, भाव धरी व रं सेव; सकळ आगम पारक, गुणधर भाखिन वाण; जयवंती आणा, ज्ञान विमळ गुणी खांण. ॥ पार्श्वनाथनी थोये.॥ पास जीणंदा, वामानंदा, जब गरमें फळी; सुपनां देखे अर्थ विशेखे, कहे मध्या मळी; जिन-

वर जाया सुर हुंलराया, हुआ रमणी प्रिये, नेमि

राजी चित्त विराजी, विशेक्ति द्वा लींए. !!

नगरे सिधाया.

<u>(१२६)</u>

श्री मल्लिनायनी योय

मल्लिनाथ मुखवंद निहाळुं, अरिहा प्रणमी पातक टाळु, ज्ञानानद विमल पुरसर, धरण प्रिया शुम वीर कुवेर

अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पानापुरी व रु, वासुपूज्य चपानयर सिद्धा, नेम रेवागिरि वरु; समेत शिखरे वीस जिनवर, मोक्ष पोहोत्या सुनिवरु, चोवीश जिनवर नित्यवदु, समय संघ सुहंकरं । १। ॥ कोघनी सम्राय ॥

कहवा फळ छे क्रोघनां, ज्ञानी एम बोले।। रीस नणो रम जाणीए, हअहळ तोले।। कहवा०॥ ।।१॥ क्रोच कोड पूरवनणुं, संजम फळ जाय॥ क्रो धमहिन नप जे करे, तेनो लेखे न धाय॥कहवां०॥ ।।२॥ माधु घणो नपीयो हतो, घरतो मन वैराग॥ शिल्यना कोघथकी थयो, चडकोशीयो नोग। कहवा ।।३।। आग उठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाळे ।। जळनो जोग जो निव मळे, तो पासेनुं प्रजाळे ।।। ।।कडवां०।।४।। कोधतणी गित एहवी, कहे केवळ-नाणी ।। हाण करे जेह हेतनी, जाळवजो प्राणी ।।। ।।कडवां०।।४।। उदयरत्न कहे कोधने, काढजो गळे साइ ।। काया करजो निर्मळी, उपशम रस नाइ ।। कडवां फळ छे कोधनां ।। ६ ।। इति ।।

माननी सझाय,

रे जीव मान न कीजीए, माने विनय न आवे रे; विनय विना विद्या नहीं, तो केम समिक्त पावे रे; ॥ रेजीव०॥१॥ समिक्त विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्तिरे, मुकित विना सुख शाश्वातां, केम लहिये युक्तिरे, ॥ रेजीव०॥१॥ विनय वहों संसारमां, गुणमां अधिकारीरे गर्ने गुण जाये गळी. चित्त जुओ विचारीरे ॥ रेजीव०॥३॥

स्का लाकडां सारिखो, दु खदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत कहे मानने, देशो देशवटो रे ॥ रे जीव मान न कीजीए ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ मायानी संशाय ॥ समक्तिन् बीज जाणीएजी, सत्य बचन सा-क्षात साचामां समकित वसेजी, 'क्रुहामां मिय्यालरे प्राणी मक्रो माया लगार (1811 मुख मीठो जुड़ो मनेजी, क्रुइक्पटनोरे कोट जीमे तो जीजी करे जी, चित्त माहे नाके चोररे ॥ प्राणी० ॥ शा आंप गरजे आघो पहेजी पण न घरे विश्वांस. मेर्ल न

छांडे मन नणोजी, ए मायाना पासरे 1र्माणी शैश जे इंग्रुं मांडे प्रीतडीजी, तेह्जु रहे पविक्ल, मैंन नींबे मुके आमळोजी ए मायानु मुळरे। पाणी शितप कींधुं माया करीजी, मित्रशुं राख्योरे भेद; मिल्ल जिनेश्वर जाणजोजी, तो पाम्या स्त्री वेदरे ।प्राणी.। ॥५॥ उदय रत्न कहे सांभळो जी, मेलो मायानी चुद्ध मुक्तिपुरी जावा तणोजी, ए मारग छे शुद्ध-रे ॥प्राणी ।। इति.

· ॥ लोमनी सञ्जाय ॥

लोभ न करीये प्राणीयारे, लोभ बुरो सं-सार; लोभ समो जगमां नहीं रे, दुर्गतिनो दातार; भाविकजन. लोभ बुरोरे संसार करजो तुमे निर-घार भविकजन. जीभ पामो भवपार ॥भ० लोस० ॥१॥ अति लोभे लक्ष्मीपतिरे, सागर नामे शेउः पुर पयोनिधियां पडयोरे, जइ बेठा तस हेट ॥ भ० लोम०॥ सोवनम्गना लोभयीरे, दशस्य सुत श्रीराम सीता नारी गुमाबीनेरे, भमीयो ठामोठाम धम॰लोभ॰॥ इसमा गुणगणा लगीरे लोभत-

णु छे जोर शिवपुर जातां जीवनेरे, एइज मोटो चोर ॥म॰लोम॰॥था करोघ मान माया लोमधी रे, दुर्गति पामे जीव, परवश पहीयो वापहोरे अ निर्ग पाढे रीव ।।म॰लोम॰।।५।। परिप्रहना परि हारथीरे. लहिये शिवसुल सार देवदानव नरपति थहरे, जाशे मुक्ति मोझार ॥भ॰लोम०॥६॥ माव सागर पंहित मणेरे, वीरसागर घुध शिष्य छोम तणे त्यागे करीरे, पहेंचि सयल जगीश भविक-ਜ਼ਰ ॥ਲोभ।।।।।

॥ जोवन व्ययीरनी सद्याय ॥

जोबनीआनां मोजां फोजां, जाय नगारां दे तीरे, चढी घढी घढीआठा वाजे, तोही न जागे तेथीर ॥जो०॥था जरा राक्षसी जोर करे छे, फो लागे फजेती रे, आवी अवधे उसके नहीं, छसप-नीने छेती रे ॥जो०॥२॥ माळे वेठा मोज करे छे. खांते जोवे खेतीर; जमरो ममरो ताणी लेशे, गो-फण गोळा सेती रे. ॥जा०॥३॥ जिमराजाने शरणे जाओ, जोरा लोको जेथी रे; दुनियामां दुजा दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे. ॥जा०॥४॥ दंत प-हयाने होसो थयो, काज सर्यु नहीं केथी रे; उदय-रत्न कहें आपे समजो, कहीए वातो केतीरे. ।५॥

।। आदिनाथनी लावणी।।

श्री आदिनाथ निखाणी नमुं एशे ध्यानी, भव जीव तरणके काज बणाइ वाणी ॥ आंकणी ॥ तुम-नाभिराय क्लधारी बडे अवतारी, खुल रही खळकमें खूब केसरकी क्यारी; तुम ममता मनकी मारी आतमा तारी, तज दइ विपत विखयनकी जानकर खारी; तुम करी मुगत पटराणी जगतमें जाणी. ॥भव०।१। जांण्या सुरनर सुखराशी हुवा है उदासी, जल गई जवल जंजाळ जगतकी फांसी; तुम जगतपति अविनाशी मुक्तिके वासी, तेरेद रसनर्से सब दु स दुर गयो नाशी, प्रभु करी सफळ जिंदगानी मेरे मन मानी ॥मवंशाशा बढ़े जात वत जिनराज जगतम बाजे, तेरे दरसण हे सुख दाय सुपारे नाजे, तेरी घुन गगनमें गाजे सरपत लाजे, गल गया गरव पासंह कामना भाजे, नाटक नाचे ईदाणी अधिक धन आणी ॥भव०।३॥ तेरी महिमा मही न जावे पार नहिपावे, तेरे गांधर्व स-रात सन छेरे गुण गावे, तेरे चरणोसे लपयवे स रम लब लावे. नर नार हियाके माहे मगति तेरी व्हावे तेरी तृष्णा सव बीर लाणी मुगतिक वाणी ॥भवः॥२॥ मरुदेवा क्रम्बका जाया अमर पद पाया. छपत्र कुमरी नारी मीलि जस गाया, दुरगतको दु ख तिरराया मफूठ करी काया. जीनदास निरजन दे ख रारण तर आया ममक्तिकी सेज पीछाणी मळी मोह दाणी ॥भवनापा

॥ अजीतनाथनी लावणी ॥

श्री अजितनाथ महाराज. गरीब निवाज, ज-रिर जिनवरजी, शेवक शिर नामी तने उचारे अर-जी. ए आंकणी. ॥१॥ कर माफी मारां वांक, रझ-ळीओ रांक, अनंता भवमें; आव्यो छुं ताहरे शर्ण, मळी दुःखदवमें; क्रोधादिक धुता चार, खरेखर खार, रुग्या मुज केडे;वळी पापी माहारो नाथ छेक छंजेडे; आ युजरो युज भगवान करुं गुणगान, ध्यानमां धर्जी. ॥शेवक०॥२॥ में पुरण कर्यी छे पाप, सु-णजा आप, कहुं कर जाडी, युज भुंडामां भगवान ' भुल नहीं थोडी; जीवहिंसा अपरंपार. क्री किरता-र, हवे शुं करवुं, जुठुं बहु बोली, सावने शुं हरवुं; तुज खोळामां मुज शिश, जाण जगदीश, गमे ते करजी. ॥ शेवक० ॥३॥ में कर्यी वहु कुकर्म, धर्यी नहीं धर्म, पुरण हुं पापी, अवळो थइ तहारी आण, मेंज उत्थापी; हुं मुरल निंद्या धणी, सुनिवर तणी, तुम ज्यातपति अविनाशी मुक्तिके वासी, तेरेद रसनमें सब दु ल दूर गयो नाशी, प्रभु करी सफ्छ जिंदगानी मेरे मन मानी ॥भवनाशा बहे जेात वत जिनराज जगतम वाजे, तेरे दरसण हे सुख दाय सुवारे काजे, तेरी धुन गगनमें गाजे सुरपत लाजे, गल गया गरव पार्खंड कामना भाजे, नाटक नाचे इंद्राणी अधिक घुन आणी ।।मव्याशा तेरी महिमा कही न जावे पार नहि पावे, तेरे गांधर्व सु-रात सब छेरे गुण गावे, तेरे चरणोसे लपटावे स रम लव लावे. नर नार हियाके मांहे भगति तेरी च्हावे, तेरी तृष्णा सब वीर लाणी मुगतिक अणी ।।भवः।।।। मरुदेवा कुलका जाया अमर पद पाया, छपन कुमरी नारी मीलिं जस गाया, दुरगतको दुःस तिरलाया मुफ्ठ करी काया, जीनुदास निरंजन दे ख रारण तेरे आया, समकितकी सेज पीछाणी मळी मोहे यणी ॥भवनाधा

॥ अजीतनाथनी लावणी ॥

श्री अजितनाथ महाराज. गरीब निवाज, ज-सर जिनवरजी, शेवक शिर नामी तने उचारे अर-जी. ए आंकणी. ॥१॥ कर माफी मारां वांक, रझ-ळींओ रांक, अनंता भवमें; आव्यो छुं ताहरे शर्ण, बळी दुःखदवमें; क्रोधादिक धुता चार, खरेखर खार, रुग्या मुज केहे;वळी पापी माहारो नाथ छेक छंजेहे; आ युजरो युज भगवान करुं गुणगान, ध्यानमां धरजी. ॥शेवक०॥२॥ में पुरण कर्या छे पाप, सु-णजा आप, कहुं कर जाडी, युज भुंडामां भगवान मुल नही थोधीं; जीवहिंसा अपरंपार, करी किरता-र, हवे हुं। करवं, जुठुं बहु बोली, साचने हुं हरवुं; तुज खोळामां मुज शिश, जाण जगदीश, गमे ते करजी. ॥ शेवक॰ ॥३॥ में कर्या बहु कुकर्भ, धर्यी नहीं धर्म, पुरण हुं पापी, अवळो थइ तहारी आण, मेंज उत्थापी; हुं मुरल निंद्या धणी, मुनिवर तणी, (१४४) करी इरखायो, परदारा देखी छुवाड हुं छळचायो,

किंकर कहे केशवलाल, आणीने वहाल, दुसने ्रजी ॥ शैवक०॥ ४॥

॥ गांतिनायनी स्रवणी ॥

सुण शाति शांति दातार, जगत आघार, स चळ जिनवरजी, अचळ जिनवरजी, किंकर शिर ना-भी तने सुणावे अरजी ॥ ए आकणी ॥ कैवल्यपद जिन तुज नाम सुणी गुण घाम, इरल घरी मनमा, इरल घरी मनमां, आब्यो हुं तारे शरण भमी मव वनमां, कोघादिक वैरो चार दिये वहु मार, पहया गुज केहे, वळी अर्जित पुन्य कदवकने फंफेडे, मुज र खत्रारनो अन, लावी भगवंत, तुम सम कर

जी, तुज सम करजी ।िकंकर०।१। मुज अवगुणने जिनराज माफ कर आज, कहु कर,जोडी, कहुं कर जोडी, भव अकुपारथी तार कमेने तोडी, में पुरण कर्यो कुकर्म धर्यो नहीं धर्म, मर्त्य भव पामी, मर्त्य भव पामी,वळी अमर तणे अवतार थयोबहु कामी; हवे तुजविना जिननाथजोड़ नहि हाथ, हरीने ह-रजी, हरीने हरजी. ॥ किंकर० ॥ शा वासव सेवित भगवान करं गुणगान, दर्श दो जिनजी, दर्श दो जिनजी, तुज दिसणमां जगदीस, मुज मन ली-नजी, तुम चरण जलजनी सेव आपजो देव, ज गत उपगारी, जगत उपगारी, पद पंकज सेवी तुर्ण वरु शिवनारी, माणिक वंदे तुम पाय, विभु जिन-राय, पापचय हरजी, पापचय हरजी.॥ किंक० ॥३॥ ॥ केसरीआजीनी लावणी ॥

• सुनीयोरे बाता सदाशीवजी, मत चढ जाना धुल देवा गढपित उनका बडा हे डंका, मत छेडो तुमे उन देवा; सगतारेपत चुडावत बोले, अमही बोकर इन हुका, हिंदुपतसं हाथ जोडकर, तोन म-

वनमें हे टिका ।।सुनियोरे०।१। सरग मरत पाताळ सुनीये, सुरिनर सुनिजन धावत हे इद चंद्र सुनि दरशन आवे, मनकी मोजा पावत हे ।। सुनीयोरे॰ ।२। गया राज दिन केसे आवे, निरंघनीयाई घन देवे, बाज सीलावे सुदर लडका, सदा सुसी रहे तुम सेवे ।।सुनीयोरे ।३। तारे झाझ समुदर माहे रोग निवारे भवभवका, भुप रगको रंग दियो है चोरन वधन हरी देवा ॥ सनीयोरे० । ध ध धं धं ष्ठ धुंमा बाजे, देशो देश पर हे हंका, भाउ ताती-या युक्र वोले, मत क्तलावो बहवंका ।।सुनीयोरे० 141 गणाजी कहे उमराव वजीरने, मानत नही अ**म** ए बानां, नारी फरणी तुं पावेगो, में नहीं आर्बु तुम सार्था ।। सुनीयो० ।६। मुछ मरोही चढे अमिमाने झेर भया हे नजरोमें, रीखभदास कहे साहेबसचा. देख तमासा फजरोम ।।सुनीयोरे० ॥ ७ ॥

॥ होरीओ, वसंत ॥

वसंत पंचमीने नडतम क्षेत्र, लगन लीयो नि-रधार ललना: संउ साजन मळी तोरण आये, पश्रेडे मांडयो पोकार. वसतर विवाह आदयी हो. ॥ १ ॥ लीला पीळा वांस रंगावो, चोरी चितरावो चार लल-ना; भावे ते देवता वेद भणे छे, मंगळ गावे सखी-यां चार. ।।वसंत्र ।२। आठ भवनी हुं नारी तमारी, शोरे अमारो वांक ललना भवो भवनी हुं दासी त-मारी, काळो छे कामणगारो.।।वसंत ०१। नेमजी है-यामां कोघे भरागा, संसारमां नहीं सार ललना; रथ-वाळी नेम गीरनारे चाल्यां रोती रहे राजुल नार. ।।वसंत०। ४। राजुल चाल्यां संजम लेवा, जइ चड्यां गढ गिरनार ललना; कर जोडी गौतम पाये लागु, साचो छे दीन दयाळ. ॥ वसंत ॥ ५ ॥ रंग मच्यो जिनदाररे, चालो खेलीए होरी. पासजीके दरबाररे. ॥ चालो० ॥ फागन के दि न चाररे ॥ चालो०॥ ए आकणी॥ कनक कचोळी केसर घोळी, पुजो विविध प्रकाररे ॥ चालो ॥१॥ कृष्णागरको घुपँ घटत हे, परिमळ बहेके अपाररे ॥ चालो॰ ॥२॥ स्रस् ग्रस्तर भवील उहावत, पा सजी के दरबारने ।चालो ।३। मरी पीचकारी गुला लकी छीरको वामादेवी कुमाररे ॥चालो ॥ ४ ॥ ताल मृदंग वेण इफ बाजे, मेरी सुंगळ रणकाररे । चालो ॥५॥ सब सिखयन मिली खुवार सुनावत, गावत मग्रु साररे ॥ चालो ॥६॥ रत्नसागर प्रस् भावना भावे, मुखबोले जयजयकाररे ।चालो ।७। ॥ गहुंछी १ छी ॥

ा गहुळा र छा ।।
जीरे जिनवर बचन सोहं करुं, जीरे अवि
चळ सासन बीररे, गुणवंता गिरुआ, वाणी मीठीरे
माहावीर तणी जीरे पर्पदा बार मूळी तिहां, जीरे
अरथ प्रकाशो गुणगभीररे, गुणवंता गीतम, प्रभ पुछेरे महावीर आगळे ।श जीरे निगोद स्वरूप मुजने कहो, जीरे केम ए जीवविचार रे; ।गु ।वा.। जीरे मधुर ध्वनिये जगगुरु कहे. जीरे करवा भ-विक उपकाररे. शि. वा.। जीरे राज चौद लोक जा-णिये, जीरें असंख्याता जोजन कोडाकोडीरे; । गु. ।वा.। जीरे जोजन एक एमां लीजीये, जीरे ली-जीय एक एकनो अंशरे । गु० । वा । शे जीरे एक निगोदे जीव अनंन छे, जीरे पुदगल परमाणुंआ अनंतरे; ॥गु.॥वा.॥ जीरे एक प्रदेशे जाणीये, जी रे प्रदेशे वर्गणा अनंतरे. ॥गु.॥वा.॥४॥ जोरे असं-रूय गोळा संख्य छे, जीरे निगोद असंख्य गोळा शेषरे ; । गु । वा.। जोरे परमाणुआ प्रत्ये गुण अनंत छे, जीरे वरण गंध रस फरसरे. ॥ग्र./वा./५। जीरे लोक सकलमय इस भयों, ज़ीरे कहे गौतम धन्य तुम ज्ञानरे; ॥गु.॥वा.॥ जीरे एवा गुरुनी आगळ गहुं अली, जीरे फतेशिलर अमृतशिवनी श्रेणीरे ॥ गु.॥ वा.।६।

॥ गहुंळी २ जी ॥

ससी सरस्वति भगवति मातारे, काइ प्रण-मीजे सुलशातारे, कांद्र वचन सुवारस दाना, गुण-वता मांमळो वीर वाणीरे कांइ मोसतणी निशाणी । गु ॥श। ए आंकणी ॥ काइ चोवीसमा जिनरायाः रे साथे चीदसइस मुनीरायारे जेइना सेवे सुरनर पाया ।। गु।सा०।। श। सखी चतुरंग फोजा सायरे, सिख आया श्रेणिक नर नायरे, प्रमु वदीने हुआ स नाथ ।।गुनामांनाः। वहु सिलयो सयुत्र राणीरे, आवी चेलणा गुण खाणीरे, एतो भागंहलमा उजा णी ।।गुः ।।सां ।।।। करे साथीयो मोहनवेलरे, कांइ प्रभुने वधावे रग रेलरे, कांइ घोवा कर्मना मेल ।।गु ।।मा ।।५॥ वारे पर्पदा निसुणे वाणीरे, काइ अमृतरम सम जाणीरे, कांइ वरवा मुक्ति पट राणी ॥ गु ॥ सा ॥ ६॥

॥ सान वार. ॥

आदिते अरिहंत अम् धेर आवोरे, मारा च्याम सलुणा नेम दिलमां लावोरे. ॥१॥ सोमे ते शुभ शणगार सजीए अंगेरे, मारा जुगजीवननी साथ रमीए रंगेरे ।। शा मंगळ शुभ दिन आज मं-गळ चारुंरे, कांइ नवभव केरो स्नेह हुं संभारुंरे.।२। चुध घेर आवो नाथ बुद्धिना बळीआरे, प्रभु एक सेहेंस ने आउ लक्षण यरिआ रे. ॥ शा गुरु गिरवा गुणवंत शिवादेवीनारे, कांइ समुद्रविजय कुळचंद नेम नगीनारे. ॥५॥ शुरुर शेहेसावन चालो सज-नी रे. मारे समय थयो प्रभान विनी रजनीरे.। ६। शनिशर संजम लीय शीन वधारी रे, दोनुं पाम्या परमानंद नेम ने नारी रे. । ।। मुळचंद कहे एम आशा फुळशेरे, जे निरमळ पाळे शीयळ मवजळ तरशेरे. ॥८॥ अमे नमीए नेमी जीणंद गढ गिर-नाररे, राणी राजुल जुवे वाट साते वारेरे.

।।गरबी ।। अवधु सुता क्यां इस मटमें ए टेक इस , मठका हे कवन भेरीसा, पढ जावे चटपटमें ॥ **अवधु** ॥ थ। जिनमें ताता छिनमें शीतळ रोग शोक चहु मठमे, ॥अवधा।२५ पानी किनारे मठका वासा, कवन विश्वास ए तर्टमें ॥ अवधु ॥ ३॥ सुतां सुतां काठ गमायो, भजहु न जाग्यो तुं धर्मे ।।अवधु।। ॥ ४॥ धरकी फेरी आटो सायो, सरची न गंधी वरमें ॥अवधा।५॥ इतनी सुनी निधि चारित्र मि-लकर, ज्ञानानंद आये घटमें ।।अवध्राक्षा ॥ महावीरस्वामीनु हालसीयुं ॥ छानो मोरा उन, छानो मोरावीर, पछे तमारी दोरी नाणु महाबोर कुबर झुळे पारणीए झुळे टेक हीरना छे दोर, घुमे छे मोर कोयलढी सुर नारी ॥ महावीर ॥१॥ इंदाणी आवे, हालण हुलण लोंने बीरने हेते करी हुल्सवे ॥ महाबीर ॥ वा सुदर वेदेनी आवे, आमुपण लावे, साजा रहां

लावे; मोतीचुर भावे; वीरने हेते करी जमाडे, ।।महावीर.।।३।। वीर म्होटा थाशे, निशाळे भणवा जाशे; एम त्रिसलामाता हरखाशे. ।।महावीर.।।४।। नंदिवर्धन आवे, राणी रुडी लावे; वीरने हेते करी परणावे।। महावीर.।।४।। वीर म्होटा थाशे, जगतमां गवाशे; एम कांति विजयगुण गाशे.।।महावीर।।६।। ।। आरती. ।।

जय जय आरती आदि जिनंदा. नाभी-राया मारु देवीको नंदा, प्रेहेली आरती पुजा कीजे नरभव पामीने लाहो लीजे. ॥ जे. ॥शा दुसरी आरती दीन दयाळा, धुळेव नगरमां जग अज-वाळ्या. ॥जे.॥२॥ तीसरी आस्ती त्रीभुवन देवा सु-रीनर् इंद्र करे तोरी सेवा. ॥जें.॥२॥ चोथी आर-ती चौगति चुरे, मनवंछीत फळ शीव सुख पूरे.॥ ॥ जे.॥श। पंचमी आ्रती पुन्य उपाया, मूळचंद रीखव गुण गाया. ॥ जे. ॥ ५ ॥

(488)

॥ मंगळदीवो ॥

चिरजीवो ।दी । सोहामणुं घेर पर्व दीवाळी अमर

दीवो दीवो मंगलिक भारती उतारीने वहु

खेले अमरा बाळी ॥ दी ॥ दीपाळ भणे एणे कुछ अजुआळी, भावे भगते विघन निवारी ॥दी ॥ दी पाळ भणे एणे कळी काळे. आरती उतारी राजा-क्रमारपाळे ॥ दी ॥ अमचेर मंगलिक तमचेर मं-गलिक, मगलिक चतुर्विष सघने हीजो ।।दी।। ॥ ओच्छन् ॥ ओच्छ्य रंग वधामणां, प्रमुपासने नामे,क ल्याण ओच्छ्य कीयो, चडते परोणामे सन वर्ष आयु जीवीने अक्षय सुल स्वामी, तुम पद सेवा भक्तिमां, नहीं राखं लामी, साचीरे भक्ते साहंबा, रीझो एक वेका श्री शुमवीर होवे सदा, मन वं

छीत मेळा